डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 34 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 08

शिखर दृष्टि जीवन की... साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

जयपुर >> सोमवार, 28 फरवरी, 2022

R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

hillviewsamachar@gmail.com

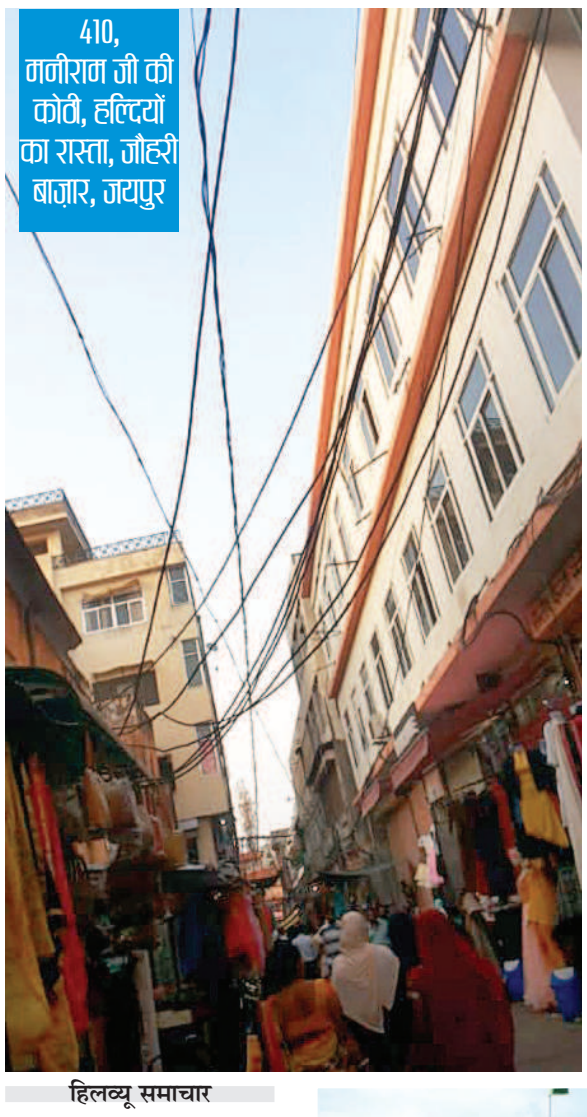

410, मनीराम जी की कोठी, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाज़ार, जयपुर

हिलव्यू समाचार

राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर द्वारा पारित आदेश में मनीराम जी की कोठी सहित 143 अवैध व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स के ध्वस्तीकरण के आदेशों की धज्जियाँ उड़ा रहा नगर निगम हेरिटेज जयपुर

मेयर मुनेश गुर्जर, हेरीटेज

हिलव्यू समाचार

जयपुर। मनीराम जी की कोठी सहित 143 आवासीय भवनों में व्यवसायिक कॉम्प्लेक्सों अवैध निर्माण के विरुद्ध राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर ने ध्वस्तीकरण का आदेश 18 सितंबर 2019 को पारित किया। जिसमें तीन सूचियों में इन 143 अवैध भवनों के नाम पते सहित नगर निगम हेरिटेज जयपुर को ध्वस्त करने हेतु पाबंद भी किया गया किंतु पिछले 2 साल 6 माह से उच्च न्यायालय जयपुर के आदेश की अवमानना नगर निगम हेरिटेज जयपुर लगातार कर रहा है।

- ऐसी क्या वजह है कि इस पर अब तक कोई क्रिया -प्रतिक्रिया हेरिटेज नगर निगम जयपुर की ओर से होती नहीं दिखाई पड़ती?
- नगर निगम हेरिटेज के तात्कालीन आयुक्त विजयपालसिंह ने राजस्थान उच्च न्यायालय को ध्वस्तीकरण हेतु शपथ-पत्र भी दिया था कि माननीय न्यायालय के आदेशानुसार 3-3 माह यानि कुल एक वर्ष में आदेशित अवैध कॉम्प्लेक्सों को ध्वस्त कर दिया जाएगा किंतु आज तक भी कोई कार्यवाही नहीं हुई।

स्वायत शासन विभाग राजस्थान सरकार की विभिन्न अधिसूचना व परिपत्रों के आधार पर यह निर्देशित है कि रिहायशी क्षेत्रों व भवनों में व्यवसायिक गतिविधियाँ व अवैध निर्माण सम्भव नहीं है किंतु लगातार परकोटा क्षेत्र जयपुर में अवैध निर्माण हो रहे हैं और आवासीय भवनों में लगातार व्यवसायिक गतिविधियाँ संचालित हो रही हैं। धीरे-धीरे यह आवासीय क्षेत्र व्यवसायिक क्षेत्रों में तब्दील हो गए हैं। बहुमंजिला इमारतें, कॉम्प्लेक्स, लगातार होते अवैध निर्माण, यूनेस्को के नियम विरुद्ध अवैध निर्माण कार्य लगातार प्रशासन को धता दिखा रहे हैं।

डीएलबी सिविल रिट पिटिशन संख्या 15 318/ 2013 सुओमोटो बनाम स्टेट ऑफ राजस्थान के माध्यम से एडवोकेट शोभित तिवारी, एडवोकेट विमल चौधरी, एडवोकेट योगेश टेलर की याचिका पर निर्णय सुनाते हुए चीफ जस्टिस प्रकाश गुप्ता एडवोकेट महेंद्र शाह, एडवोकेट अनिता अग्रवाल, एडवोकेट लक्ष्मीकांत, एडवोकेट अनिल मेहता AAG, एडवोकेट एसएस शर्मा, एडवोकेट महेश गुप्ता व एडवोकेट मधुसूदन शर्मा के तहत इन अवैध निर्माणों को ध्वस्त करने के आदेश हेरिटेज नगर निगम जयपुर को प्रदान किये। इसी के साथ यह भी निर्देशित किया गया कि अधीनस्थ अदालतें उच्च न्यायालय जयपुर द्वारा पारित इस आदेश के विरुद्ध कोई आदेश पारित नहीं कर सकतीं लेकिन --

ढाई साल से लंबित यह ध्वस्तीकरण की कार्यवाही किस भ्रष्टाचार की ओर इशारा कर रही है?

कैसी हिटलरशाही से ये हेरिटेज नगर निगम काम कर रहा है।

नगर निगमों में दुस्साहस भरने वाला माफ़िया कौन है?

यह जानना बेहद ज़रूरी है क्योंकि संभवतः शासन और प्रशासन की ताक़त का सहारा लिए बिना नगर निगम यह दुस्साहस नहीं कर सकता।

आम जनता जानना चाहती है कि इन अवैध कॉम्प्लेक्सों को अब तक ध्वस्त क्यों नही किया गया?

दिखावे के तौर पर 4-5 भवनों को नोटिस देकर सील भी किया गया। कॉम्प्लेक्सों को सील करने का आदेश केवल एक बहाना मात्र है जबकि इन अवैध व्यवसायिक भवनों को तुरंत प्रभाव से ध्वस्त किया जाना राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा आदेशित है।

अगले अंक में ध्वस्तीकरण हेतु अंकित 143 भवनों की सूची भी जारी की जाएगी। जिसमें लिखित है कि 3 माह में प्रथम 19 अवैध कॉम्प्लेक्सों की सूची,उसके अगले 3 माह में द्वितीय 12 अवैध कॉम्प्लेक्सों की सूची व उसके अगले 3 माह में अर्थात आदेश के 6 माह पश्चात अंतिम 112 अवैध कॉम्प्लेक्सों की सूची होगी। वर्तमान में यह सभी भवन किशनपोल ज़ोन नगर निगम हेरिटेज की सीमा में आते है।

चर्चा है कि एक विधायक व एक मंत्री का भी इसमें सक्रिय योगदान है आगामी अंकों में होगा नाम उजागर...

खबर-बेखबर

राजधानी के इस अवैध निर्माण के जंगलराज का असली राजा कौन?

शालिनी श्रीवास्तव

जयपुर कॉलेज (नाना जी की हवेली) में अब अवैध निर्माण पाँचवीं मंज़िल हो चुका है लेकिन हेरिटेज नगर निगम के आँख, नाक, कान बंद हैं, कार्यवाही के हाथ भी बंधे हैं.....क्यों ?

जयपुर कॉलेज (नाना जी की हवेली, गोपाल जी का रास्ता (चौड़ा रास्ता) का लगातार मंज़िल दर मंज़िल चढ़ता अवैध निर्माण हो या राजापार्क या एशिया की सबसे बड़ी कॉलोनी मानसरोवर या मालवीय नगर के आवासीय क्षेत्र में बढ़ती बहुमंज़िला भवन और कॉम्प्लेक्स।

अवैध निर्माण...जयपुर कॉलेज (नाना जी की हवेली) चौड़ा रास्ता, परकोटा, जयपुर

यहाँ बढ़ते-चढ़ते यह अवैध निर्माण, यहाँ के निवासियों का सुख-चैन तो छीन ही रहे हैं और तो और समूचा शहर भूमाफियाओं और अतिक्रमणकारियों के नापाक इरादों की भेंट चढ़ रहा है।

इन रिहायशी और पॉश कॉलोनियों में से गुज़रना मुश्किल हो गया है। गली-गली में बाज़ार और वाहनों का जमावड़ा तो बढ़ ही गया है साथ ही बढ़ गया है घर से दुकान में तब्दील होते भवनों का अतिक्रमण।

बहुमंज़िला भवन बिना निगम अनुमति के सर उठा रहे हैं। प्रशासन और राजनीति के बड़े दिग्गज़ों का हाथ और साथ पूरे ज़ोर-शोर से सहयोग कर रहा है। जहाँ एक और रेवेन्यू का सबसे बड़ा भाग भवन निर्माण, नियमितीकरण आदि से आता है वहीं एक और निगम के नाक के नीचे सारे काम अवैधता के साथ हो रहे हैं। राजधानी में इस अवैध निर्माण के जंगल राज का राजा कौन है यह किसी से छुपा नहीं। बिना किसी बड़ी पावर और प्रशासनिक राजैनतिक अनर्गल अवैध सहयोग के यह अवैध निर्माण कभी सम्भव नहीं हो सकते।

प्रशासन और शासन की लिप्तता शहर की शांति को लगातार ग्रहण लगा रही है।

एक मार्च से शुरू होगा स्वच्छ सर्वेक्षण

जयपुर मेयर ने तैयारियों के लिए बुलाई बैठक में ही नहीं आए आयुक्त, सर्वे में टॉप रैंक लाने का टारगेट

हिलव्यू समाचार

जयपुर। जयपुर नगर निगम ग्रेटर में मेयर सौम्या गुर्जर और आयुक्त यज्ञमित्र सिंह के बीच शुरू हुआ विवाद अब भी बरकरार है। जयपुर में 1 मार्च से शुरू होने वाले स्वच्छ सर्वेक्षण की तैयारियों के लिए मेयर ने आज बुलाई एक बैठक से आयुक्त ने खुद को दूर रखा। ऐसे में सवाल उठते है कि क्या इस सर्वेक्षण में मेयर ने जो शहर को टॉप सिटी में लाने की बात कही है वह पूरी हो पाएगी या नहीं? क्योंकि किसी भी योजना को धरातल पर क्रियान्वित करने का काम अधिकारियों का ही होता है।

1 मार्च से शुरू होने वाला यह सर्वेक्षण 28 मार्च तक चलेगा। महापौर सौम्या गुर्जर ने आज निगम मुख्यालय के सभासद भवन में निगम अधिकारियों, कर्मचारियों की एक बैठक बुलाई, जिसमें स्वच्छ सर्वेक्षण में जयपुर को कैसे टॉप रैंक पर लाया जाये इसको लेकर चर्चा की। इसके लिए मेयर ने अधिकारियों-कर्मचारियों को पूरा फोकस शहर की सफाई व्यवस्था को सुधारने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिस कर्मचारी-अधिकारी के क्षेत्र में बेहतर सफाई रहेगी उसे इनाम दिया जाएगा। इसके अलावा उन्होंने कर्मचारियों को आमजन से स्वच्छ सर्वेक्षण में ज्यादा से ज्यादा भाग लेने के लिए जागरूक करने के भी निर्देश दिए।

पहले स्थान पर लाना हमारे लिए चुनौती: बैठक में मौजूद उपमहापौर पुनीत कर्णावट ने कहा कि पिछले साल हुए स्वच्छ सर्वेक्षण में जयपुर को 36वां स्थान मिला था। इस बार हमे सर्वश्रेष्ठ रैंक लानी है जो हमारे के लिए एक बड़ी चुनौती है। इस बार जयपुर में दो नगर निगम भी है, जहां ये सर्वे करवाया जा रहा है।

नकल गिरोह की संपत्ति सीज़ और 10 साल की सज़ा

10 करोड़ तक का जुर्माना, नकल की तो अभ्यर्थी को भी 3 साल तक की जेल

हिलव्यू समाचार

जयपुर। रीट में पेपर लीक के बाद हुए विवाद के बीच राजस्थान सरकार नकल रोकने का बिल लाई है। बिल में पेपर लीक और नकल गिरोह में शामिल लोगों को अपराध साबित होने पर 5 से 10 साल तक की सजा का प्रावधान किया है। नकल में शामिल लोगों पर सजा के साथ कम से कम 10 लाख से 10 करोड़ तक का जुर्माना लगाया जा सकेगा। नकल रोकने का बिल गुरुवार को विधानसभा में पेश किया गया। राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (भर्ती में अनुचित साधनों की रोकथाम के उपाय) विधेयक 2022 को उच्च शिक्षा राज्य मंत्री राजेंद्र यादव ने इस बिल को विधानसभा में रखा। इसके बाद 15 दिन में यह बिल पास हो जाएगा। बिल पास होने के बाद से नकल पर सख्त कानून तय हो जाएंगे। इस बिल में पेपर लीक और नकल गिरोह की संपत्ति जब्त कर नीलाम करने का प्रावधान किया गया है। स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी से लेकर सरकारी नौकरियों के लिए होने वाली भर्ती परीक्षाओं में नकल, पेपर लीक गिरोह के खिलाफ इस बिल में कड़े प्रावधान किए हैं।

प्रॉपर्टी जब्त कर कुर्क किया जाएगा: नकल और पेपर लीक गिरोह में शामिल हर व्यक्ति को दोषी होने पर 5 से 10 साल तक की सजा का प्रावधान किया है। नकल गिरोह में शामिल हर व्यक्ति पर कम से कम 10 लाख का जुर्माना होगा। यह जुर्माना 10 करोड़ तक का हो सकेगा। पेपर लीक और नकल से कमाई गई संपति के आधार पर जुर्माना बढ़ भी सकता है। प्रॉपर्टी जब्त कर उसे कुर्क किया जाएगा।

नकल की तो 1 लाख तक जुर्माना: किसी भी परीक्षा में अगर कोई अभ्यर्थी नकल करता है या पेपर लीक गिरोह से पेपर खरीदने का दोषी पाया जाता है तो उसे 3 साल की सजा और 1 लाख रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान किया है। परीक्षार्थी अगर नकल गिरोह का सदस्य है तो उसकी सजा और जुर्माना भी गिरोह के बाकी लोगों की तरह ही होगी। नकल करते पकड़े जाने पर दो साल तक किसी तरह की परीक्षाओं में शामिल नहीं हो सकेंगे। स्कूल-कॉलेज से लेकर हर तरह की परीक्षाओं में नकल करने पर दो साल तक परीक्षा देने पर रोक का प्रावधान होगा। अभी भी नकल में शामिल परीक्षार्थियों का रिजल्ट रोकने और परीक्षा से बाहर करने के प्रावधान हैं, लेकिन अब प्रावधान और कड़े किए जा रहे हैं।

नोटिस भी अब साधारण डाक की बजाय मिलेंगे स्पीड पोस्ट से

विशेष अदालतों से होगा सूचना आयोग के प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण

हिलव्यू समाचार

जयपुर। राज्य सूचना आयोग में अब न्यायालय संबंधी डाक जैसे नोटिस, समन और निर्णय आदि संबंधित व्यक्ति को स्पीड पोस्ट से भिजवाए जाएंगे। इसके लिए राज्य सूचना आयोग द्वारा डाक विभाग के साथ एग्रीमेन्ट भी किया गया है।

मुख्य सूचना आयुक्त डीबी गुप्ता ने आज शुक्रवार को जयपुर स्थित सूचना आयोग भवन में प्रेस को संबोधित करते हुए बताया कि आयोग द्वारा जारी नोटिस समय पर तामील नहीं होने के कारण संबंधित व्यक्ति नियत तिथि पर न्यायालय में उपस्थित होकर अपना पक्ष रखने में असमर्थ रहते थे। इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए अब आयोग द्वारा महत्त्वपूर्ण पत्रों को साधारण डाक की बजाय स्पीड पोस्ट से भेजने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने बताया कि इस कार्य में प्रतिमाह 3 लाख रुपये का अतिरिक्त खर्चा होना अनुमानित है।

इस अवसर पर मुख्य सूचना आयुक्त ने आयोग की डाक को स्पीड पोस्ट के लिए डाक विभाग की वैन को सुपुर्द कर इस कार्य का विधिवत शुभारम्भ किया।

विशेष लोक अदालतों से होगा प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण: गुप्ता ने बताया कि आयोग द्वारा जयपुर में 14 मई तथा 28 मई 2022 को विशेष अदालत का आयोजन कर नगर निगम हेरिटेज तथा ग्रेटर से संबंधित लम्बित प्रकरणों का निस्तारण कर आमजन को राहत प्रदान करने का कार्य किया जाएगा। उन्होंने बताया कि आयोग द्वारा लम्बित प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के लिए तीसरी बार विशेष अदालत का आयोजन किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि आयोग में प्रतिमाह औसतन एक हजार नए प्रकरण दर्ज होते हैं। लम्बित प्रकरणों के तीव्र निस्तारण के लिए किये गए अथक प्रयासों के कारण आयोग द्वारा लगभग प्रतिमाह औसतन 1675 प्रकरणों का निस्तारण किया गया है, जो कि एक कीर्तिमान है।

राजस्थान राज्य सूचना आयोग भवन में बना अतिरिक्त कोर्ट

मुख्य सूचना आयुक्त ने बताया कि वर्तमान में राज्य सूचना आयोग के भवन में चार कोर्ट रूम बने हुए हैं। आयोग में एक मुख्य सूचना आयुक्त तथा चार सूचना आयुक्तों की कोर्टों का संचालन किया जा रहा है। ऐसे में एक अतिरिक्त कोर्ट रूम के निर्माण की आवश्यकता होने के कारण आयोग द्वारा द्वितीय मंजिल पर कोर्ट रूम निर्माण का कार्य अप्रेल माह से करवाया जाना प्रस्तावित है। उन्होंने कहा कि इससे प्रकरणों के निस्तारण में और भी तेजी आयेगी।

23-24 जुलाई को होगी रीट-2022

जयपुर। विवादों में रहे रीट एग्जाम के लिए नई तारीखों का ऐलान हो गया है। प्रदेश में टीचर्स के 46 हजार 500 पदों के लिए 23 और 24 जुलाई को रीट परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। इसमें लेवल-1 की 15 हजार, जबकि लेवल-2 के लिए 31 हजार 500 पदों के लिए परीक्षा आयोजित की जाएगी। भर्ती विज्ञप्ति मार्च में जारी होगी। जबकि आवेदन की प्रक्रिया अप्रैल में शुरू होगी। बुधवार को बजट पेश करते हुए सीएम गहलोत ने रीट परीक्षा का आयोजन जुलाई में कराने का ऐलान किया था। इसके कुछ ही घंटे बाद शिक्षा मंत्री बीडी कल्ला ने शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों के साथ बैठक कर परीक्षा की तारीख घोषित कर दी। ऐसे में इस साल 62 हजार पदों पर शिक्षकों की भर्ती की जाएगी। शिक्षा मंत्री बीडी कल्ला ने बताया कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा ही 46 हजार 500 पदों पर रीट का आयोजन किया जाएगा।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर >>सोमवार, 28 फरवरी, 2022

संपादकीय

रूस का यूक्रेन पर हमला आने वाले दिनों में विश्व व्यवस्था को बदलने वाला साबित होगा

कोरोना महामारी से विश्व भर में लाखों लोगों की मौत और आर्थिक उठापटक के बाद से ही यह स्पष्ट हो गया था कि द्वितीय विश्वयुद्ध और उसके बाद शीत युद्ध के जटिल घटनाक्रम के जरिये अस्तित्व में आई वह वैश्विक व्यवस्था दरकने लगी है, जिसमें अमेरिका वैश्विक सुरक्षा का गारंटर हुआ करता था। जब कोरोना महामारी के रूप में फैला तब अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप सत्ता में थे। उनका बार-बार यह कहना था कि वैश्विक सुरक्षा के लिए चीन और जिहादी चरमपंथ सबसे बड़ा खतरा हैं। जब चीन की ओर से कोरोना वायरस को लेकर विश्व से जानकारी छुपाने के चलते महामारी फैली तो ट्रंप हाथ धोकर चीन की जवाबदेही तय करने के लिए उसके पीछे पड़े, परंतु इसी बीच हुए अमेरिकी चुनावों में उन्हें जो बाइडन के नेतृत्व में वामपंथी उदारवादी शक्तियों के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा। बाइडन ने सत्ता में आते ही सारी अमेरिकी शक्ति चीन से हटाकर रूस की ओर लगा दी और द्वितीय विश्व युद्ध से भी पिछले जमाने की यूरोपीय रंजिशों को फिर से जीवित करने में लग गए।

नाटो सोवियत संघ और उसके नेतृत्व वाली वारसा संधि के देशों की संयुक्त सैन्य शक्ति से मध्य यूरोप को बचाने के लिए अस्तित्व में आया था। पिछली सदी के आखिरी दशक में सोवियत संघ के विघटन के बाद से नाटो नैतिक रूप से औचित्यहीन हो गया था। अब उसके विस्तार की आवश्यकता नहीं बची थी। इसके बावजूद अमेरिका नाटो का विस्तार पूर्वी यूरोप में रूस की ओर करता ही गया। 1998 के बाद से पूर्वी यूरोप के दर्जनों देशों को नाटो का सदस्य बनाया गया। जबकि मिखाइल गोर्बाचोव को अमेरिका की ओर से यह मौखिक आश्वासन मिला था कि सोवियत संघ के विघटन के बाद नाटो का विस्तार नहीं किया जाएगा। स्पष्ट है कि इसके बाद भी नाटो का विस्तार मध्य यूरोप के ताकतवर देशों जैसे जर्मनी और पूर्वी यूरोप के छोटे देशों को अमेरिकी अंगूठे के नीचे रखने के लिए किया गया।

जब पुतिन ने रूस की सत्ता संभाली तो भारी आर्थिक कर्ज से दबे रूस की कमजोर स्थिति को देखते हुए उन्होंने अमेरिका और यूरोपीय नेताओं के सामने यह प्रस्ताव रखा था कि वे यह सुनिश्चित करें कि नाटो उनके देश के लिए खतरा न बनने पाए, जो अनसुना कर दिया गया। इसके बाद दस साल तक पुतिन नाटो के रूस की ओर विस्तार पर चुप्पी साधे रहे, परंतु 2007 में म्युनिख में अपने ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने कहा कि अमेरिका के नेतृत्व वाला एकध्रुवीय विश्व अलोकतांत्रिक है और वैश्विक सुरक्षा को खतरे में डाल रहा है। इसके बाद से पुतिन ने रूस की मजबूत होती स्थिति का लाभ उठाकर पूर्वी यूरोप और मध्य-पूर्व में अमेरिकी प्रभुत्व को चुनौती देना शुरू किया और अंतत- यूक्रेन के रूसी भाषी इलाके क्रीमिया को रूस में विलय कर डाला। इस सबके बीच चीन की भारत-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती दादागीरी और दक्षिण चीन सागर और भारतीय इलाकों पर कब्जा जमाने की उसकी मंशा अमेरिका को जगा देने के लिए काफी होनी चाहिए थी, पर अमेरिकी राजनीतिज्ञ अपने क्षुद्र स्वार्थों में उलझे रहे।

यूरोप में भी जहां अमेरिका रूसी प्रभाव को लेकर चिंतित रहा, वहीं तमाम यूरोपीय देशों पर बढ़ते चीनी प्रभाव को लेकर कभी सशंकित नहीं हुआ। रूस पर लगातार अमेरिकी दबाव का चीन ने भरपूर लाभ उठाया और अमेरिका के विरुद्ध दोनों देशों में एक प्रकार की सहमति ने जन्म ले लिया, जो तब भी नहीं थी जब दोनों देशों में कम्युनिस्ट सरकारें हुआ करती थीं। रही सही कसर बाइडन की चीन को कोरोना महामारी से मारे गए 60 लाख लोगों की मौतों के लिए जवाबदेह बनाने के स्थान पर शीत युद्ध के जमाने के नाटो का यूक्रेन में रूसी सीमा तक विस्तार करने की जिद ने पूरी कर दी। कुछ महीने पहले अफरातफरी में अफगानिस्तान छोड़कर कर जाती अमेरिकी सेनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया था कि विश्व व्यवस्था में अमेरिका के दिन लद गए और अमेरिकी सैन्य प्रबंधन तंत्र अक्षमता और अव्यवस्था से ग्रस्त है। अब इसके पूरे आसार हैं कि अमेरिका यूरोप की भूराजनीतिक उठापटक में फंसता चला जाएगा। ऐसे में अगर चीन रूस की तर्ज पर एशिया में पांव पसारने और ताइवान पर कब्जा करने का प्रयास करता है तो इसके कम ही आसार हैं कि अमेरिका ताइवान के पक्ष में सीधे युद्ध में उतरे। चीनी रणनीतिकार यह सब देख रहे हैं। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह होगा कि क्या भारत एशिया का सामरिक संतुलन बदलते देखता रहे? यह हमारे लिए संभव नहीं होगा, क्योंकि ताइवान से निपटने के बाद चीन भारत पर ही ध्यान लगाएगा। पूरे हिमालयी मोर्चे पर वह वैसे भी आगे बढ़ रहा है। अगर कल को चीन भूटान जैसे किसी देश पर कोई सैन्य कार्रवाई करता है तो हमारा जवाब कैसा होगा, यह विचार करने का समय है। हमें यह भी देखना होगा कि चीन के प्रति उदार बाइडन प्रशासन कहीं रूस से उसका गठजोड़ तोडने के लिए चीनी कम्युनिस्ट नेताओं से एक बार फिर निक्सन-किसिंजर की तरह कोई गुप्त संधि तो नहीं कर लेगा? संभवत- रूस इन संभावनाओं को लेकर कुछ हद तक सजग है। यह मात्र एक संयोग नहीं कि यूक्रेन में युद्ध शुरू करने से कुछ महीने पहले पुतिन ने भारत-चीन सैन्य तनाव के मद्देनजर एस-400 मिसाइल प्रतिरोधी प्रणाली की भारत में तैनाती सुनिश्चित की, परंतु अब अमेरिकी प्रतिबंधों का दबाव रूस को चीन की ओर धकेलेगा और पुतिन के लिए भारत और चीन के बीच संतुलन बनाना कठिन होता जाएगा। कोरोना महामारी से उपजी परिस्थितियों में हर बड़ा देश लाभ उठाने के प्रयास में है। ऐसे में देशों के बीच में गठजोड़ तेजी से बनेंगे और टूटेंगे भी। सैन्य तनाव और टकरावों की संभावनाएं पहले से कहीं अधिक हैं। सामरिक अनिश्चितता से भरा यह काल भारत के लिए बड़े मौकों और बड़े खतरों, दोनों को ही जन्म देने वाला है। हम वैश्विक स्तर पर भारी उठापटक से बचना चाहें तो भी नहीं बच सकते। ऐसे में यह आवश्यक है कि हम अत्यंत सजग रहते हुए इस अंतरराष्ट्रीय उठापटक का अपने राष्ट्रीय हितों में उपयोग करने के रास्ते खोजें। किसी एक अंतरराष्ट्रीय गठजोड़ पर निर्भर न रहते हुए हर परिस्थिति के लिए तत्पर रहें।

तीसरे विश्वयुद्ध की आहट

दुनिया पर तीसरे विश्व युद्ध का खतरा मंडरा रहा है. रूस-यूक्रेन का संघर्ष कभी भी विश्व युद्ध में बदल सकता है. अगर यह युद्ध बढ़ गया तो दुनिया के लिए गंभीर आर्थिक परिणाम होंगे. नाटो और रूस दुनिया के दो सबसे बड़े सैन्य महाशक्ति हैं. हर युद्ध की जड़ में तीन कारण हमेशा रहे हैं. एक, सैन्य असुरक्षा व सामरिक रणनीति. दो, भाषाई और सांस्कृतिक पहचान का टकराव. तीन, खनिज और प्राकृतिक संसाधन.

NATO, भाषा और खनिज संसाधन हैं विवाद की जड़

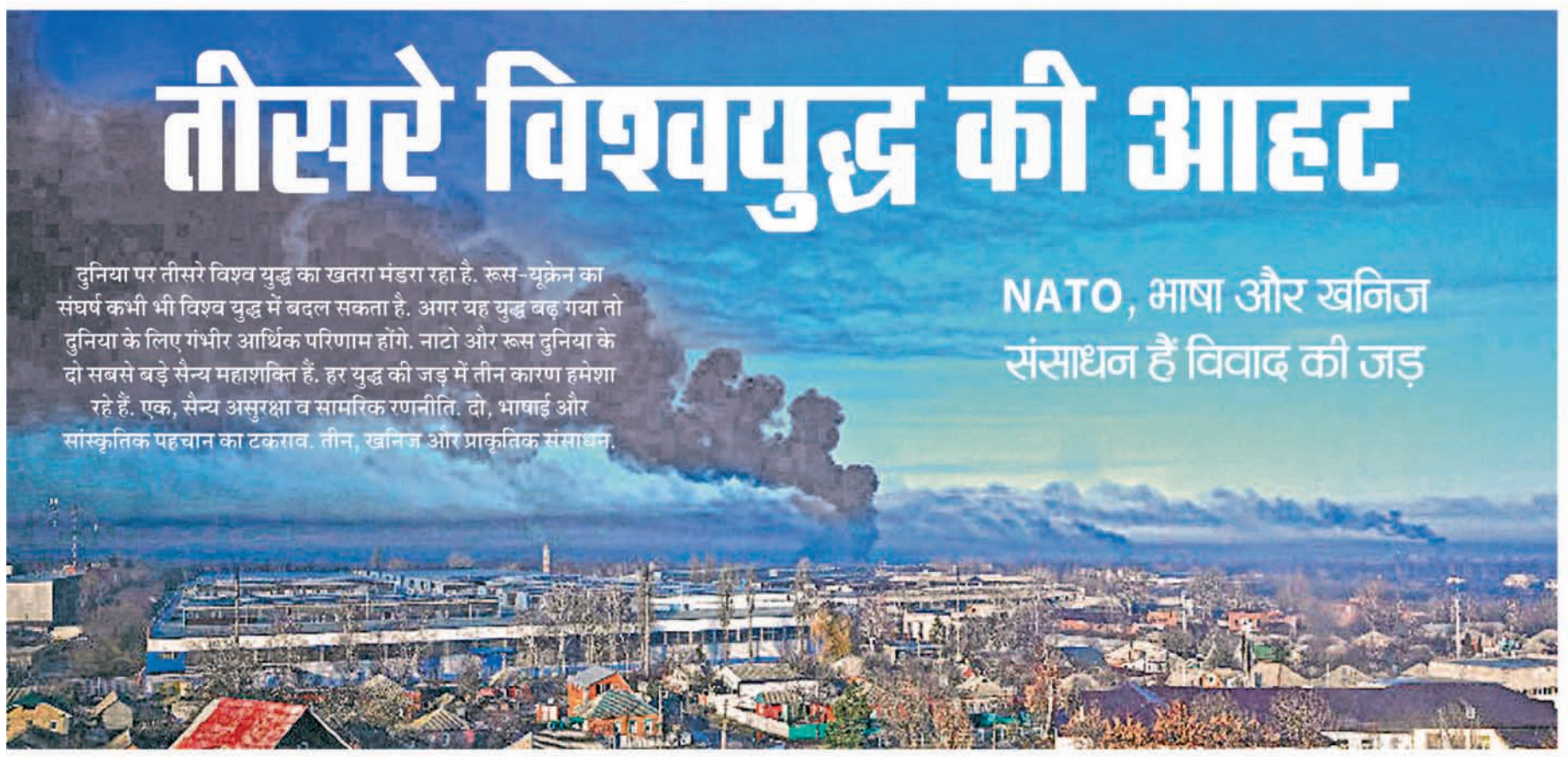

रूस और यूक्रेन के बीच प्रत्यक्ष रूप से विवाद की जड़ NATO को माना जा रहा है, लेकिन असली विवाद यूक्रेनी भाषा बोलने वालों बहुसंख्यकों पर अल्पसंख्यक रूसियों के शासन का विरोध है. पहले ही रूस समर्थक राष्ट्रपति को जनता विद्रोह करके हटा चुकी है. यूक्रेनी भाषा बोलने वाला समाज यूक्रेन की अपनी पहचान चाहता है. वह पश्चिम के साथ अपने संबंधों का विस्तार चाहता है. पुतिन, यूक्रेन को अपने कब्जे से बाहर नहीं निकलने देना चाहते.

NATO (North Atlantic Treaty Organization) साल 1949 में अमेरिका की अगुआई में शुरू किया गया सैन्य संगठन है. यूक्रेन अब तक तो NATO का सदस्य नहीं रहा है लेकिन अब शामिल होना चाहता है. रूस ऐसा नहीं चाहता. रूस अपने दरवाजे पर पश्चिम की सेनाओं को नहीं देखना चाहता. वहीं यूक्रेन का मानना है कि पुतिन रूस को सोवियत संघ वाले दौर में देखना चाहते हैं. इसलिए उससे अलग हुए देशों को वापस हासिल करना चाहते हैं. रूस के खिलाफ अमेरिका समेत नाटो के सभी सदस्य देश पूरी ताकत के साथ खड़े हैं. वहीं, रूस का समर्थन करने वाले देशों की भी कोई कमी नहीं है. यूक्रेन के समर्थन में अमेरिका, ब्रिटेन, जापान समेत कई देशों ने तो कठोर प्रतिबंधों की झड़ी लगा दी है. जर्मनी ने तो रूस की गैस पाइपलाइन नॉर्ड स्ट्रीम-2 पर ही रोक का ऐलान कर दिया है. चीन खुलकर अमेरिका और यूरोप के देशों की आलोचना कर रहा है. वह नपे-तुले शब्दों के साथ रूस का समर्थन कर रहा है.

भाषा भी बड़ा विवाद

पुतिन न तो झुकने को तैयार हैं और न ही अपने फैसले से पीछे हटना चाहते हैं. रूस ने तो यूक्रेन के दो इलाकों को स्वतंत्र देश की मान्यता तक दे दी है. पुतिन ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर यूक्रेन पर रूसी भाषी लोगों के नरसंहार करने का आरोप लगाया है.

- सोवियत संघ के विघटित होने के बाद रूस और यूक्रेन के संबंध काफी अच्छे थे. यूक्रेन की विदेश नीति पर रूस का गहरा प्रभाव था. यूक्रेन अब यूरोप के देशों के साथ जुड़ना चाहता है.
- बिगड़ती अर्थव्यवस्था, बढ़ती महंगाई और अल्पसंख्यक रूसी भाषी लोगों के बहुसंख्यक यूक्रेनी लोगों पर शासन ने विद्रोह की चिंगारी सुलगा दी है.
- साल 2014 में यूक्रेनी लोगों के विद्रोह ने संसद को अपने रूसी समर्थक राष्ट्रपति विक्टर यानुकोविच को हटाने के लिए बाध्य कर दिया. उसी साल यूक्रेनी लोगों ने अमेरिका और यूरोप समर्थक नेता पेट्रो पोरोशेंको को राष्ट्रपति चुन लिया. तब से विक्टर यानुकोविच रूस में निर्वासन काट रहे हैं.
- साल 2019 में यूक्रेन ने संविधान में संशोधन कर खुद को यूरोपीय संघ और नाटो सैन्य संगठन का हिस्सा बनने का ऐलान कर दिया. बस यही बात रूस को नागवार गुजरी और उसे लगने लगा कि यूक्रेन उनके लिए भविष्य में खतरा बन सकता है.

आर्थिक जरूरत है पश्चिम

यूक्रेन रूस और पश्चिमी देशों के बीच बफर जोन का काम करता है. इसके बावजूद यूक्रेन ने 1990 के समझौते को तोड़कर नाटो का सदस्य बनने का फैसला किया. यूक्रेन को लगता है कि वह यूरोपीय संघ और नाटो का हिस्सा बनकर अपने देश की अर्थव्यवस्था को सुधार सकता है.रूस को डर है कि अगर यूक्रेन नाटो का सदस्य बन गया तो दुश्मन देशों की पहुंच उसकी सीमा तक हो जाएगी. दूसरी दलील यह है कि पूर्वी यूक्रेन कोयले और लोहे से समृद्ध इलाका है. यहां की भूमि भी काफी उपजाऊ है. पुतिन की नजर पूर्वी यूक्रेन के खदानों पर भी है.

रूस ने हमला क्यों किया

- रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने दावा किया कि यूक्रेन पश्चिम (देशों) की कठपुतली है और यह कभी पूर्ण देश नहीं था.
- उन्होंने पश्चिमी देशों से इस बात की गारंटी देने की मांग की है कि यूक्रेन NATO से नहीं जुड़ेगा.
- यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की का कहना है कि रूस पुराने सोवियत संघ की ओर वापसी करना चाहता है.
- पूर्ववर्ती सोवियत संघ के देश के तौर पर यूक्रेन के रूस के साथ सामाजिक संबंध हैं और यहां रूसी भाषा बहुतायत में बोली जाती है लेकिन रूस के हमले के बाद से यह संबंध खराब हुए हैं.
- रूस ने यूक्रेन पर तब हमला किया था जब इसके रूसी समर्थक राष्ट्रपति को वर्ष 2014 में हटा दिया गया था. इसके बाद से हुए संघर्ष में 14 हजार से अधिक लोगों की जान जा चुकी है.
- रूस और यूक्रेन में मिंस्क शांति समझौते पर दस्तखत किए थे ताकि डोनबास क्षेत्र सहित पूर्वी यूक्रेन में संघर्ष को रोका जा रहे लेकिन चूंकि अब संघर्ष जारी है तो रूस ने कहा है कि हम संघर्ष वाले क्षेत्र में पीसकीपर्स (शांतिरक्षकों) को भेज रहे हैं. दूसरी ओर पश्चिमी देशों ने इसे रूस का ढकोसला करार दिया है.
- रूस और यूक्रेन के बीच ताजा तनाव यूरोपीय यूनियन की सीमा पर है इसे लेकर ईयू को चिंता स्वाभाविक है. यही कारण है कि ईयू, जिसमें बड़ी संख्या में नाटो देश शामिल हैं, रूस के खिलाफ प्रतिबंध की घोषणा कर रहे है.
- रूस के हमले पर यूक्रेन के विदेश मंत्रालय की ओर से ट्विटर पर कहा गया, ₹ पुतिन ने बड़े पैमाने पर यूक्रेन के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी है. यूक्रेन के शांतिपूर्ण शहरों पर हमले हो रहे हैं. यह आक्रामक युद्ध है. यूक्रेन भी अपना बचाव करेगा और जीतेगा. दुनिया को पुतिन को रोकना ही होगा. यह कुछ करने का समय है.₹
- कुछ सप्ताह पहले ही फ्रांस के राष्ट्रपति इमेनुएल मेक्रॉन ने तनाव में कमी के लिए रूस के राष्ट्रपति से बातचीत के वास्ते मॉस्को की उड़ान भरी थी

दुनिया के बड़े युद्ध

प्रथम विश्वयुद्धः रूस यहां भी था

क्या हुआ: दुनिया के हर उस देश-महाद्वीप में लड़ा गया, जहां यूरोपीय ताकतों का आधिपत्य था. पहली बार ऐसा हुआ कि कोई युद्ध एशिया, यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका में समान ताकत के साथ लड़ा गया. 28 जुलाई 1914 को शुरू युद्ध 11 नवंबर 1918 तक चला. पूरे 4 साल, 3 महीने और 2 हफ्ते. इसके कारण 3.9 करोड़ लोग मारे गए. सबसे ज्यादा 13 लाख 50 हजार के करीब सैनिक अकेले जर्मन साम्राज्य से थे.

***परिणाम:** रूस को करीब 12 लाख लोगों की क्षति उठानी पड़ी. नतीजे में जर्मनी, रूसी, ऑस्ट्रियन-हंगेरियन और ऑटोमन साम्राज्य का पतन हो गया. कई नए देशों का उदय हुआ. लीग ऑफ नेशंस जैसा विश्वव्यापी संगठन अस्तित्व में आया.*

वॉटरलू का युद्धः

वाटरलू का युद्ध 1815 में लड़ा गया. फ्रांस के योद्धा नेपोलियन का यह अंतिम युद्ध था. एक तरफ फ्रांस था तो दूसरी तरफ ब्रिटेन, रूस, प्रशा, ऑस्ट्रिया, हंगरी की सेना. परिणाम: युद्ध में हारने के बाद नेपोलियन ने आत्मसमर्पण कर दिया. लगभग एक लाख लोग मारे गए और फ्रांस की बुरी तरह से पराजय हुई. सिर्फ एक ही दिन चले इस युद्ध ने यूरोप को नई दिशा और दशा दी.

कोरिया युद्धः

कोरिया के बहाने दुनिया पर वर्चस्व स्थापित करने की जंग के तौर पर लड़ा गया. इसमें उत्तर कोरिया की तरफ से साम्यवादी शक्तियों चीन और रूस ने अप्रत्यक्ष तौर पर भाग लिया. दक्षिण कोरिया की ओर से अमेरिका और ब्रिटेन ने मोर्चा संभाला. 25 जून 1950 से 27 जुलाई 1953 तक पूरे 3 साल 1 महीने और 2 दिन तक चला.

परिणाम: लगभग 5 लाख सैनिक और 25 लाख आम लोग मारे गए. ये युद्ध अप्रत्यक्ष तौर पर चल रहा है क्योंकि अस्थाई तौर पर युद्ध विराम लागू है.

अर्बेला(गौगामेला-निर्णायक) का युद्धः

सिकंदर महान की सेना और फारस (ईरान) के राजा डेरियस उर्फ दारा की सेना के बीच लगातार अर्बेला की लड़ाई हुई. लगभग 3 लाख ईरानी सैनिक मारे गए. सिकंदर ने युद्ध में अपनी सर्वोच्चता स्थापित कर दी. वो न सिर्फ खुद रणभूमि में था, बल्कि दारा पर हमला करने वाली अंतिम टुकड़ी का नेतृत्व भी कर रहा था. सिकंदर ने अपने 40 हजार सैनिकों के साथ 3 लाख की सेना वाली ईरानी सेना को धूल चटा दी.

परिणाम: फारस के साम्राज्य को मिट्टी में मिला दिया. ईसा पूर्व से भी 3 शताब्दियों पहले के युद्ध में 3 लाख लोगों का मारा जाना बहुत बड़ी हानि.

वियतनाम युद्ध (दूसरा):

1 नवंबर 1955 से 30 अप्रैल 1975 तक चला. यानी पूरे 19 साल 6 महीने चले संघर्ष को प्रॉक्सी वॉर यानी छद्म युद्ध की संज्ञा दी गई. यह युद्ध लड़ा गया तो था उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम के बीच, सोवियत रूस समर्थक उत्तरी कोरिया और अमेरिका ने सीधी जंग लड़ी.

परिणाम: अमेरिका को अप्रत्यक्ष तरीके से हार मिली. आखिरकार अमेरिकी सेना भारी दबाव में हटी, लेकिन लगभग 4 लाख सैनिक और 4 लाख के करीब आम लोग मारे गए.लंबे समय तक 4 देशों की धरती पर लड़ा गया, जिसमें अमेरिका अपना पूरा जोर लगाने के बावजूद हार गया.

ईरान-इराक युद्धः

ईरान और इराक के बीच युद्ध 1980-88 के बीच लड़ा गया. यह युद्ध अनिर्णीत खत्म हुआ था. 70 के दशक में इराक के साथ सीमा विवाद को लेकर जो संधि हुई थी उससे इराक संतुष्ट नहीं था. आठ साल तक चले इस युद्ध में हजारों सैनिक मारे गए. इराक ने 400 मिलियन गैलन कच्चे तेल को फारस की खाड़ी में बहा दिया था.

परिणाम: कोई नतीजा तो नहीं निकला लेकिन कच्चा तेल बहाने से पर्यावरण को काफी नुकसान पहुंचा था. इस युद्ध में न सिर्फ मानवीय और आर्थिक क्षति हुई, बल्कि पर्यावरण को भी काफी नुकसान पहुंचा था.

क्रीमिया का युद्धः

रूसी साम्राज्य और यूरोपीय महाशक्तियों के बीच तुर्की के ऑटोमन साम्राज्य पर शक्ति संतुलन को लेकर लड़े गए इस युद्ध में भी लाखों जिंदगियों की क्षति हुई. एक तरफ रूसी जार की सेना थी, तो दूसरी ओर ब्रिटेन, फ्रांस, सार्डिनिया और ऑटोमन साम्राज्य था. ये युद्ध कैथोलिक और ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के धार्मिक स्थलों पर वर्चस्व को लेकर हुआ. जो अक्टूबर 1853 से लेकर फरवरी 1856 तक चला.

परिणाम: दोनों ओर से लगभग 8 लाख लोग मारे गए. गठबंधन सेनाओं में लड़ाइयों की नींव डाली.

एशिया-पैसिफिक वार (अटलांटिक युद्ध):

अमेरिका ने दुनिया का पहला परमाणु हमला हिरोशिमा और नागासाकी पर किया. इसमें 6 और 9 अगस्त के बीच ही लगभग ढाई लाख लोग मौत के मुंह में समा गए. ये युद्ध समूचे पूर्वी एशिया और पूर्वी दक्षिणी एशिया में लड़ा गया. युद्ध का फैलाव चीन, कोरिया, वियतनाम, पूर्वी सोवियत रूस, चीनी सागर, अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर से लेकर बर्मा, थाईलैंड और भारत तक रहा.

युद्ध के माहौल में इमरान की रूस यात्रा

भारत की चिंता, पाक-रूस की नई धुरी

क्रेमलिन के न्योते पर इमरान खान रूस की यात्रा करने वाले हैं. पाक अधिकारियों का कहना है कि इमरान की यात्रा ताजा घटनाक्रम से पहले तय हुई थी. भारत के लिए इस यात्रा का बड़ा रणनीतिक महत्व है. वहीं पाकिस्तान को पश्चिमी दुनिया की नाराजगी का शिकार बनना पड़ सकता है. इमरान रूस की यात्रा के दौरान ऊर्जा क्षेत्र में संबंधों का विस्तार करेंगे. इमरान 23 फरवरी को ही रूस पहुंच गए हैं. पाक मीडिया का कहना है कि अरबों डॉलर की गैस पाइपलाइन का निर्माण रूसी इंजीनियरों की सहायता से किया जाएगा. इमरान ने यह यात्रा एक ऐसे समय की है, जब पुतिन यूक्रेन पर हमले के कारण पूरी दुनिया का निशाना बने हुए हैं.

फादर ऑफ आल बम्स रूस के पास

300 किमी के दायरे में उड़ा देता है सब कुछ

रूसी सेना के पास 44 टन टीएनटी (ट्राई नाइट्रो टाल्यूइन) बम है, जो सबसे खतरनाक गैरपरमाणविक बम है . यह 300 किमी के दायरे में सब कुछ उड़ा देता है. ब्रिटिश मीडिया की रिपोर्ट की माने तो पुतिन यूक्रेन के खिलाफ फादर ऑफ आल बम्स का प्रयोग कर सकता है. यह थर्मोबेरिक बम है. जेट से इसे गिराया जाता है और हवा में फट जाता है. गैरपरमाणु हथियार होने के बाद भी परिणाम परमाणु हथियार की तरह होते हैं.

चीन को रूस का समर्थन करने से क्या मिलेगा

यूक्रेन मामले में चीन और रूस के संबंध विचित्र हो गए हैं. एक तरफ चीन की नजर यूक्रेन से गुजरने वाले वन बेल्ट वन रोड के प्राचीन सिल्क मार्ग पर है. दूसरी तरफ वह अमेरिका और यूरोप के विरोध में रूस का समर्थन कर रहा है. उसने रूस के हमले को आक्रमण कहने से इंकार कर दिया है, बल्कि अमेरिका पर निशाना साधा है कि वह आग भड़काने में लगा है.जनवरी में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमिर जेलेंस्की को दोनों देशों के राजनयिक संबंधों के तीस वर्ष मनाने का संदेश भेजा था, क्योंकि चीन की 1 ट्रिलियन डॉलर (75.63 लाख करोड़ रुपए) की महत्वाकांक्षी योजना 'वन बेल्ट वन रोड' यूक्रेन से होकर ही गुजरने वाली है.

कौन किसके साथ

यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद दुनिया का बड़ा हिस्सा रूस के खिलाफ हो गया है. वहीं चीन जैसा ताकतवर देश रूस के साथ खड़ा है. दुनिया की सबसे बड़ी फौजी ताकत नाटो यूक्रेन के समर्थन में है.

- **अमेरिका** : नाटो का सबसे ताकतवर देश अमेरिका यूक्रेन के साथ है. अमेरिका ने हथियारों का जखीरा यूक्रेन पहले ही भेज दिया है.
- **ब्रिटेन** : ब्रिटेन ने यूक्रेन का समर्थन किया है. एटी टैंक हथियार यूक्रेन को भेज दिए हैं.
- **जर्मनी** : जर्मनी ने यूक्रेन पर रूस के हमले के कारण रूस-जर्मनी के बीच गैर पाइपलाइ नार्ड-2 का काम स्थगित कर दिया है.
- **यूरोपी यूनियन** : यूरोपी यूनियन खुलकर यूक्रेन के समर्थन में आ गया है. और रूस के हमले की निंदा की है.
- **चीन** : चीन ने रूस के खिलाफ लगाए आर्थिक प्रतिबंधों का विरोध किया है. यूक्रेन मसले पर तनाव बढ़ाने के लिए अमेरिका और यूरोप की निंदा की है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

03

जयपुर >>सोमवार, 28 फरवरी, 2022

सीएम गहलोत ने 2 घंटे 46 मिनट का बजट भाषण पढ़ बनाया नया रिकॉर्ड

जयपुर। राजस्थान सरकार के बजट के इतिहास में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बुधवार को नया कीर्तिमान रच दिया. मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बजट भाषण का नया रिकॉर्ड बना दिया और पहले का रिकॉर्ड तोड़ दिया. पिछली बार मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 2 घंटे 46 मिनट का बजट भाषण पढ़कर रिकॉर्ड कायम किया था. इस बार यानी बजट 2022 को पेश करते समय मुख्यमंत्री गहलोत ने इस रिकॉर्ड को भी तोड़ दिया. मुख्यमंत्री के बजट भाषण खत्म करते ही सदन में तालियों की गड़गड़ाहट ने उनके बजट का स्वागत किया. मुख्यमंत्री ने बजट 2022 को दो घंटे 46 मिनट में पेश किया. सीएम अशोक गहलोत ने देश की वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण का रिकॉर्ड तोड़ दिया था. साल 2020 में सीतारमण ने 2 घंटे 40 मिनट का बजट भाषण दिया था. तब देश की संसद में सीतारमण का अब तक के दिए जाने वाले सबसे लंबे बजट भाषण के रूप में दर्ज हुआ था. तब वित्त मंत्री सीतारमण ने अपना भाषण सुबह 11 बजे शुरू किया था और यह 1 बजकर 40 मिनट तक चला यानी करीब 2 घंटे 40 मिनट तक उन्होंने बजट भाषण दिया. वर्ष 2019 में भी सीतारमन ने लंबा बजट भाषण पढ़ा था जो 2 घंटे 17 मिनट तक चला था. इससे पहले यह रिकॉर्ड जसवंत सिंह के नाम था. उन्होंने वर्ष 2003 में 2 घंटे 15 मिनट का लंबा बजट भाषण पढ़ा था।

सीएम गहलोत ने बांटी हर वर्ग को सौगातें

बिजली बिल में छूट, एक लाख सरकारी नौकरियां, पुरानी पेंशन योजना फिर लागू करने, कृषि बजट के माध्यम से सीएम अशोक गहलोत ने आम जनता, किसान, कर्मचारी, महिलाओं और युवाओं को खूब सौगातें दी। बजट में दिखी आगामी विधानसभा चुनाव की छाया।

गहलोत सरकार का पहला कृषि बजट पेश

ईस्टर्न राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट कॉर्पोरेशन बनाकर 13 जिलों के लिए 9600 करोड़ खर्च करेगी सरकार

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत बुधवार को पहला कृषि बजट पेश किया। मुख्यमंत्री ने कृषि बजट में किसानों की उन्नति के लिए 11 मिशन बनाने की घोषणा की है। ईस्टर्न राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट के लिए कॉर्पोरेशन बनेगा। ईस्टर्न राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट के लिए 9600 करोड़ का प्रावधान किया गया है। गहलोत सरकार ने कृषि बजट में कुल 78 हजार 938 करोड़ का प्रावधान किया है। कृषि बजट राज्य की जीएसडीपी का 5.9 फीसदी है। नोदरा, इसरदा लिंक का काम अब राज्य सरकार करेगी।

कृषि बजट की मुख्य घोषणाएं

- मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना के तहत 5000 करोड़ की घोषणा।
- राजस्थान के कृषकों के लिए 11 मिशन शुरू करेंगे।
- सूक्ष्म सिंचाई मिशन के तहत 2000 हजार करोड़ का ऐलान।
- संभागों के लिए बीज लैब बनेगी।
- मुख्यमंत्री जैविक खेती मिशन शुरू होगा। 600 करोड़ का ऐलान।
- राजस्थान कमोडिटी बोर्ड का गठन।
- राजस्थान मिलट योजना बनेगी।
- हॉर्टिकल्चर मिशन पर 100 करोड़ खर्च होंगे। 5 करोड़ रुपए की लागत से सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर मिलेट की स्थापना की जाएगी। इसमें 15000 किसानों को लाभान्वित करने के लिए 100 करोड़ की लागत से 2 साल में फल बगीचे विकसित करने के लिए किसानों को अनुदान दिया जाएगा।
- 25000 किसानों को ग्रीन हाउस जैसी अन्य सुविधाएं मिलेंगी
- मसाला फसलों का 3000 हेक्टेयर क्षेत्र में विकास करवाया जाएगा
- राजस्थान फसल सुरक्षा मिशन शुरू होगा। 35 हजार किसानों को खेतों की तारबंदी के लिए अनुदान मिलेगा।
- 3 लाख पशुपालकों को हरा चारा बीज मिनी किट उपलब्ध कराए जाएंगे।
- 60 हजार किसानों को कृषि यंत्रों पर 150 करोड़ रुपए अनुदान मिलेगा।
- टिड्डी हमला रोकने के लिए 1000 ड्रोन खरीदे जाएंगे।
- मधुमक्खी पालन के लिए 50 करोड़ का अनुदान दिया जाएगा।
- सोलर पंप स्थापित करने के लिए 500 करोड़ का अनुदान दिया जाएगा। एक लाख किसानों लाभान्वित होंगे।
- तीन साल में 2 लाख 48 हजार कृषि कनेक्शन दिए हैं। 31 दिसंबर 2012 से 9 साल से चली आ रही पेंडिंग को आगामी दो साल में खत्म करेंगे। 22 फरवरी तक सरकार के पास 3 लाख 38 हजार आवेदन आ चुके हैं।
- सभी जिलों में किसानों को सिंचाई के लिए दिन में बिजली अनुदान मिलेगा।
- इस साल 20 हजार करोड़ के सहकारी फसली कर्ज बांटे जाएंगे।
- राजस्थान के करीब 1 लाख अकृषि परिवारों को भी 2 हजार करोड़ का ब्याज मुक्त कर्ज मिलेगा।
- भूमिहीन कृषि मजदूरों को 5000 रुपए की सहायता देगी सरकार।
- 4171 ग्राम पंचायत मुख्यालयों पर ग्राम सेवा सहकारी समिति जीएसएस बनेंगी। जीएसएस खोने के मापदंडों में भी छूट दी।
- सीएम ने नहर परियोजना निगम के गठन की घोषणा की है। इंदिरा गांधी नहरों को 200 करोड़ खर्च कर सुधारा जाएगा।
- पशुपालकों को दूध पर अनुदान राशि बढ़ाई। 2 रुपए लीटर की जगह 5 रुपए लीटर राशि मिलेगी। 5 लाख दूध उत्पादकों को 500 करोड़ मिलेंगे।

हिलव्यू समाचार

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अपने बजट में कई बड़ी घोषणाएं की हैं। उन्होंने शहरों में रोजगार के लिए इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना लागू करने की घोषणा की है। अगले साल से शहरी क्षेत्रों में मनरेगा की तर्ज पर मांगे जाने पर 100 दिन का रोजगार मिलेगा। इस पर 800 करोड़ रुपए खर्च होंगे। इसके साथ ही 1 करोड़ 33 लाख महिलाओं को स्मार्ट फोन देने और कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन योजना बहाल करने की भी घोषणा की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 2022-23 में डिस्ट्रिक्ट लेवल कमेटी (डीएलसी) रेट 10% की जगह केवल 5% बढ़ेगा। गहलोत ने ऑनलाइन गेम को रेगुलेट करने के लिए कानून लाने की घोषणा भी की है। जयपुर में बड़ी चौपड़ से ट्रांसपोर्ट नगर तक और मानसरोवर से 200 फीट बाइपास तक मेट्रो के फेज-1 का विस्तार होगा। वहीं, अबांबाड़ी से सीतापुरा तक फेज-2 मेट्रो ट्रैक की डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाई जाएगी। इसके साथ ही जयपुर में वेस्ट रिसाइकल पार्क भी बनेगा। राजस्थान में लोगों के काम समय पर हों, इसके लिए राजस्थान गारंटेड सर्विस डिलीवरी एंड अकाउंटेबिलिटी एक्ट भी लाया जाएगा। इस एक्ट के तहत सरकारी सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध कराने का प्रावधान होगा। गहलोत ने बजट में कोई भी नया टैक्स नहीं लगाने की घोषणा की है। साथ ही एजुकेशन लोन के दस्तावेज दिखाने पर स्टांप ड्यूटी में 100 फीसदी छूट देने का एलान किया है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत बजट की मुख्य बातें...

युवा-रोजगार

- दिल्ली के उदयपुर हाउस में 500 युवाओं के लिए 300 करोड़ की लागत से नेहरू यूथ ट्रांजिट हॉस्टल एंड फेसिलेशन सेंटर बनेगा। इस सेंटर में दिल्ली में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवा ठहर सकेंगे।
- जुलाई 2022 में होगी रीट परीक्षा, पुराने अभ्यर्थियों को फीस नहीं देनी होगी। पहले की तरह ही मुफ्त यात्रा और सुविधाएं मिलेंगी।
- अगले साल सरकारी विभागों में 1 लाख पदों पर भर्तियां होंगी। मुख्यमंत्री वर्क फ्रॉम होम योजना लागू होगी, इसके तहत 20 हजार महिलाओं को घर बैठे रोजगार दिया जाएगा।
- सीआईएसएफ की तर्ज पर आरआईएसएफ के गठन की घोषणा। इसके तहत 2000 हजार सुरक्षाकर्मियों की भर्ती होगी। इनकी तैनाती रीको जैसे इंडस्ट्रियल एरिया में की जाएगी।
- राजस्थान दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना 2022 शुरू करने की घोषणा। इसमें 100 करोड़ की लागत से इंक्यूबेशन सेंटर खुलेंगे। वंचित वर्ग के लोगों को इंडस्ट्री शुरू करने के लिए 25 लाख तक सब्सिडी मिलेगी। वंचित तबकों को इंडस्ट्री शुरू करने के लिए कई सुविधाएं दी जाएंगी।

कर्मचारी

- 1 जनवरी 2004 और उसके बाद नियुक्त सभी कर्मचारियों को नई पेंशन की जगह पुरानी पेंशन मिलेगी।
- रिटायर्ड होने पर अब कर्मचारियों को पूरी पेंशन मिलेगी। अंशदायी पेंशन योजना खत्म। 2004 से पहले वाली पुरानी पेंशन प्रणाली फिर से बहाल होगी। वेतन की आधी पेंशन मिलेगी। नई पेंशन सिस्टम में कर्मचारी को खुद पैसा कटवाना होता था। अब पुरानी पेंशन बहाल।
- 1 अप्रैल 2022 से संविदाकर्मियों की सैलरी 20 फीसदी बढ़ेगी।

बिजली

- 50 यूनिट मुफ्त बिजली।
- सभी घरेलू उपभोक्ताओं को 150 यूनिट तक 3 रुपए और 150 से 300 यूनिट तक 2 रुपए।
- इससे ऊपर के कंज्यूमर को भी स्लैब के हिसाब से लाभ। इस पर 4000 करोड़ का खर्च होगा।

स्वास्थ्य

- चिरंजीवी स्वास्थ्य योजना में 10 लाख तक का कवर मिलेगा। कॉकलियर इंप्लांट सहित कई गंभीर बीमारियां भी जोड़ी। जरूरतमंद व्यक्तियों का कलेक्टर चिरंजीवी स्वास्थ्य कार्ड के बिना भी फायदा दिला सकेंगे
- सरकारी अस्पतालों में आउटडोर और इनडोर में हर तरह का इलाज कैशलेस, कोई पैसा नहीं लगेगा।
- मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा की घोषणा, 5 लाख तक का एक्सीडेंट कवर मिलेगा।
- अगले साल 18 बचे हुए 18 जिलों में नर्सिंग कॉलेज खुलेंगे, सभी जिलों में नर्सिंग कॉलेज होंगें। एसएमएस अस्पताल, जयपुर में 5 नए विभाग, रोबोटिक सर्जरी शुरू होगी, 300 करोड़ खर्च होंगे।
- अगले साल अजमेर, जोधपुर और कोटा में नए मेडिकल इंस्टीट्यूट पर 250 करोड़ खर्च होंगे।
- 1000 उपस्वास्थ्य केंद्र खोले जाएंगे, 50 उप स्वास्थ्य केंद्रों को क्रमोन्नत करते हुए 100 नए पीएचसी खुलेंगे।
- जयपुर के एचसीएम रीपा में स्टेट रोड सेफ्टी इंस्टीट्यूट खुलेगा। रोड सेफ्टी एक्ट लाया जाएगा।

शिक्षा

- 3800 सेकेंडरी स्कूल सीनियर सेकेंडरी में क्रमोन्नत करने की घोषणा। - रेगिस्तानी जिलों में 200 नए प्राइमरी स्कूल खोले जाएंगे।
- जेएलएन मार्ग जयपुर की शिक्षण संस्थाओं को मिलाकर एजुकेशन हब बनेगा। 250 करोड़ खर्च होंगे। पोद्दार स्कूल, राधाकृष्ण लाइब्रेरी एजुकेशन हब के हिस्से होंगे।
- पैरा ओलिंपिक पदक विजेताओं को भी ओलिंपिक पदक विजेताओं की तरह ही जमीन और दूसरी सुविधाएं दी जाएंगी।
- 19 जिलों में 36 गर्ल्स कॉलेज खुलेंगे।

सामाजिक क्षेत्र

- आर्थिक पिछड़ों के लिए 100 करोड़ ईडब्ल्यूएस कोष का गठन होगा।
- 1 करोड़ 33 लाख महिलाओं को स्मार्ट फोन देगी सरकार।
- मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना शुरू योजना होगा। इसमें 33 लाख चिरंजीवी परिवारों की महिला मुखिया को - 3 साल की इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ स्मार्ट फोन दिए जाएंगे।
- गैर अधिस्वीकृत पत्रकारों को भी अब कोविड पैकेज का लाभ मिलेगा। गैर अधिस्वीकृत पत्रकारों की कोविड से मौत पर 50 लाख का पैकेज मिलेगा।

इंडस्ट्री

- पचपदरा में 383 वर्ग किलोमीटर पेट्रोकेमिकल इंवेस्टमेंट रीजन बनेगा, इसके विकास के लिए 1000 करोड़ खर्च होंगे।
- सीआईएसएफ की तर्ज पर राजस्थान इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स आरआईएसएफ का गठन होगा, इस पर 2000 भर्तियां होंगी।
- पर्यटन को इंडस्ट्री का दर्जा दिया जाएगा।
- निवेश प्रोत्याहन योजना का लाभ एक साल और बढ़ाया।
- अब एमएसएमई सेक्टर के उद्योगों को 5 साल तक किसी तरह की सरकारी मंजूरी की जरूरी नहीं होगी , यह अवधि पहले 3 साल थी।
- निजी क्षेत्र में खुलने वाली स्पोर्ट्स एकेडमी को निवेश प्रोत्साहन योजना का लाभ मिलेगा, 1 करोड़ तक की कैपिटल सब्सिडी, रिप्स 19 के लाभ मिलेंगे।
- राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना-2022 लाने की घोषणा, इंडस्ट्री को कई सुविधाएं दी जाएगी।
- राजस्थान रूरल टूरिज्म स्कीम लाई जाएगी। इसमें स्टांप ड्यूटी में पूरी छूट मिलेगी। इन यूनिट्स को कस्टमाइज्ड पैकेज मिलेगा। कर्ज पर सब्सिडी मिलेगी।

कानून व्यवस्था

- 500 पुलिस मोबाइल यूनिट बनेंगी, पुलिस अभय कमांड के कैमरे बढ़ाकर 30 हजार होंगे।
- कमर्शियल सेंटर्स पर सीसीटीवी अनिवार्य करके उन्हें अभय कमांड सेंटर से जोड़ा जाएगा।
- सेंटर फॉर साइबर सिक्योरिटी खुलेगा।
- हर जिले में साइबर थाने खोले जाएंगे।
- 10 से ज्यादा नए पुलिस थाने खुलेंगे, चौकियों को थानों में क्रमोन्नत करने की घोषणा।
- जोधपुर हाईकोर्ट परिसर में बार काउंसिल के लिए 7 करोड़ की लागत से भवन बनेगा।

अब ईस्टर्न कैनाल खुद बनाएगी गहलोत सरकार

- ईस्टर्न राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट के लिए ईआरसीपी कॉर्पोरेशन बनेगा, ईआरसीपी के लिए 9600 करोड़ का प्रावधान। नोदरा, ईशरदा लिंक का काम हाथ में लिया जाएगा। इसका का काम अब राजस्थान सरकार ने खुद हाथ में लेने का फैसला किया है।
- पिछले विधानसभा चुनाव में पीएम मोदी ने इसे राष्ट्रीय परियोजना घोषित करने का आश्वासन दिया था लेकिन अब तक इसे राष्ट्रीय परियोजना का दर्जा नहीं मिला है। गहलोत कई बार पीएम को लिख चुके हैं। अब गहलोत सरकार ने ईआरसीपी का काम खुद हाथ में लेने का फैसला किया है। ईस्टर्न कैनाल से पूर्वी राजस्थान के जिलों को सिंचाई और पीने का पानी मिलेगा।
- भूमिहीन कृषि मजदूरों को 5000 रुपए की सहायता देगी सरकार।

टूरिज्म को उद्योग का दर्जा देकर दी बड़ी राहत

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पर्यटन को अब इंडस्ट्री का दर्जा देकर ऐतिहासिक कदम उठाया है। अब इस पर्यटन से जुड़े लोगों को वो सब लाभ व फायदे मिल सकेंगे जो सरकार इंडस्ट्रीज को देती है। राजस्थान सरकार ने आज बजट घोषणा में टूरिज्म को उद्योग का दर्जा देकर बहुत बड़ी राहत दी है। अब उद्योगों के लिहाज से ही पर्यटन से जुड़े लोगों को बहुत फायदा होगा। बिजली से लेकर बैंकिंग सेक्टर तक में होटल रेसोर्ट्स आदि लोगों को आने वाली परेशानियों को काफी राहत मिलेगी तथा उद्योग के लिहाज से लाभ भी मिलेगा। इससे कोरोना से पर्यटन से जुड़े लोगों को हुए नौकासन के बाद राहत की उम्मीद जगाई गई है। बजट में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने एडवेंचर टूरिज्म स्कीम लागू करी है जिसमें प्रदेश के हर जिले में 2 पर्यटन स्थलों का चुनाव किया जाएगा और उसको एडवेंचर ट्यूरीज्म के लिहाज से विकसित किया जाएगा। जैसलमेर जिला चूंकि पर्यटन से जुड़ा है तो जैसलमेर में भी 2 पर्यटन स्थलों का चुनाव किया जाएगा। उन जगहों पर एडवेंचर टूरिज्म स्कीम लागू की जाएगी। इससे जैसलमेर को दुबई की तर्ज पर सैलानियों की आवक मिलेगी। साथ ही एडवेंचर चाहने वाले सैलानियों को जैसलमेर में भी उनकी मन पसंद डेस्टिनेशन मिलेगी। इसके साथ ही राजस्थान रुरल ट्यूरीज्म योजना की घोषणा से ग्रामीण इलाकों में पर्यटन को बेनीफिट मिलेगा।

जयपुर की तर्ज पर उदयपुर और कोटा विकास प्राधिकरण

अजमेर, जोधपुर और जयपुर की तर्ज पर अब उदयपुर व कोटा में भी यूआईटी को क्रमोन्नत कर विकास प्राधिकरण बनाया जाएगा। इस नई घोषणा के बाद उदयपुर-कोटा क्षेत्र के कई गांव जो अभी राजस्व विभाग (जिला कलेक्ट्रेट) के दायरे में आ रहे है उन गांवों को विकास प्राधिकरण के क्षेत्राधिकार में लाया जाएगा। इन क्षेत्र का नए सिरे से मास्टर प्लान बनेगा।

आधारभूत ढांचा

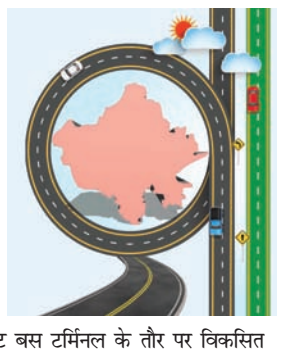

- हर विधानसभा क्षेत्र में 10 करोड़ की लागत से सड़कों की मरम्मत होगी। विधायकों के क्षेत्र में सड़कों की मरम्मत होगी। 2000 करोड़ खर्च होंगे।
- 750 करोड़ की लागत से जयपुर में अजमेर रोड, दिल्ली रोड पर सेटेलाइट बस स्टेशन बनेंगे। सिंधी कैंप बस स्टेंड को इंटरस्टेट बस टर्मिनल के तौर पर विकसित किया जाएगा।
- पिछड़े क्षेत्रों के विकास के लिए 100 करोड़ की योजना।

हिलव्यू समाचार

hillviewsamachar@gmail.com

04

जयपुर ≫सोमवार, 28 फरवरी, 2022

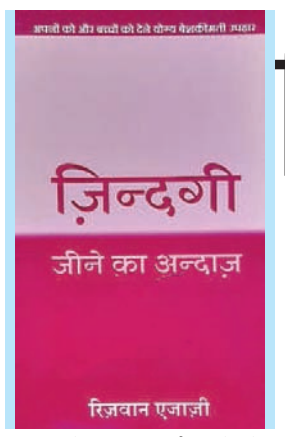

ज़िन्दगी की सच्चाई-आम का पेड़

पृथ्वी पर मनुष्य को सभी जीव जन्तुओं से अलग बनाया है। देखा जाये तो हाथी उससे अधिक शक्तिशाली है। शेर, चीता उससे अधिक तेज़ दौड़ सकते हैं, ताकतवर हैं। बंदर उससे अधिक छलांग लगा सकता है। वह चिड़िया की तरह उड़ नहीं सकता। मछली की तरह तैर नहीं सकता, कुत्ते की तरह सूंघ नहीं सकता सांप बिच्छू की तरह उसमें ज़हर नहीं है। मक्खी, मच्छर उससे कहीं अधिक फुर्तीले हैं। यहाँ तक कि चींटी में भी उससे अधिक विशेषताएँ हैं। फिर भी वह सभी जीवों से सर्वश्रेष्ठ है, सभी जीवों को क़ाबू में करना जानता है।

क्योंकि उसकी सबसे बड़ी शक्ति है, उसकी विचारशीलता, कल्पनाशक्ति।

प्रारम्भ में मनुष्य भी जानवर जैसे गोरिल्ला, बंदर की तरह आदिमानव था, उन्हीं की तरह जीवनयापन करता था, परन्तु कल्पनाशक्ति के द्वारा ही उसने धीरे धीरे उन्नति की और आज सुसंस्कृत, साधन सम्पन्न व संसार पर शासन करने योग्य बन गया है परन्तु यह योग्यता क्षण भर में प्राप्त नहीं हुई है। लाखों वर्षों के कठिन संघर्ष, कठोर परिश्रम, बलिदान के कारण आज यह चमकता हुआ संसार दिखाई दे रहा है। कितने वैज्ञानिकों ने स्वयं ज़हर का उपयोग कर दवाईयों का आविष्कार किया है। पहाड़ियों पर, जीवन भर कोठरियों में बन्द रह कर उपलब्धियाँ हासिल की हैं। अन्यथा हम आज भी गुफ़ाओं, पेड़ों की डालियों पर बन्दरों की तरह लटक रहे होते यदि हमारे जब पूर्वजों, आविष्कारों ने अपने प्राणों की, सुख सुविधा की बलि नहीं चढ़ाई होती।

इसी प्रकार राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में सोचा जाये तो इस देश की स्वतन्त्रता के लिये हज़ारों लोगों ने जीवन बलिदान किये। भौतिक सुंख, साधन, अंग्रेजों की शानदार अफ़सरी, व्यापार को तिलांजली देकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद कर इस देश को स्वतंत्र कराया। प्रश्न यह है कि मानव संस्कृति व आधुनिक युंग प्राप्त करने के लिये जो संघर्ष पूर्वजों ने एवं देश को स्वतंत्र कराने में जो बलिदान सेनानियों ने किये, इस देश का आधुनिक एवं उन्नत रूप दिया, क्या हम उन महापुरुषों का अनुसरण कर रहे हैं? मानव विकास व देश की स्वतंत्रता की बेहद क़ीमत चुकानी पड़ी है, हमारे पूर्वजों को।

क्या हम उसी भावना व बलिदान देने की मानसिकता से मानवता के विकास में योगदान प्रदान कर रहे हैं? अथवा उनके द्वारा प्रदान की गई, शानोशौकत व आज़ादी को मात्र भोग रहे हैं? स्वयं उसी मेहनत, त्याग की राह पर चल रहे हैं, अथवा पृथ्वी का बोझ बने हुए हैं। कोई भी मनुष्य जीवन दो तरह से गुज़ार सकता है या तो पशुओं की तरह, मात्र पेट भर कर दो चार बच्चे पैदा कर अपना जीवन चक्र पूरा कर ले। येन केन प्रकारेण जो उपलब्धियाँ पूर्वज छोड़ गये हैं, उन्हें अपने परिवार, स्वयं के लिये जुटा कर अपना जीवन गुज़ार लें अथवा महान् आविष्कारकों, सैनानियों की तरह उल्लेखनीय कार्य कर अमर हो जायें। अपना नाम इतिहास के सुनहरे पन्नों पर अंकित कर जायें। मात्र स्वयं के लिये जीवन जीना स्वार्थपूर्ण कहलाता है, और मानव से यही अपेक्षा की गई है कि वह मानव कल्याण हेतु अपना योकदान अवश्य प्रदान करें।

मनुष्य का कर्तव्य है कि प्रारम्भ में शिक्षा आदि पाकर स्वावलम्बी बनने का प्रयास करे। मेहनत, ईमानदारी से स्वयं का विकास कर अपने पैरों पर खड़ा होकर अधिकारी, इंजीनियर, डॉक्टर, अध्यापक, उद्योगपति, व्यापारी, पत्रकार, जननेता आदि के रूप में उल्लेखनीय उन्नति करने के पश्चात् स्वयं के माध्यम से पीड़ित मानवता की सेवा में अपना योगदान अवश्य प्रदान करना उसका कर्तव्य है। तब उसे अपनी सुख सुविधा, स्वार्थ, परिवार से अधिक मानवता के हितार्थ कार्य करना चाहिये।

मनुष्य जीवन कैसा हो?

सर्वश्रेष्ठ जीवन की तुलना मैं आम के पेड़ से करता हूँ। आम का पेड़ फल, पत्ती, लकड़ी, छाया, ऑक्सीजन क्या नहीं देता तो क्या आम का पेड़ स्वार्थी नहीं है? आम का पेड़ भी स्वार्थी होता है। प्रारम्भावस्था में ज़मीन से पानी, लवण, वातावरण से प्रकाश, कार्बनडाईआक्साइड व उचित वातावरण प्राप्त कर आम का पेड़ बढ़ता है। उस समय उससे कुछ प्राप्त नहीं होता और जब वह भरपूर हष्टपुष्ट हो जाता है, भरपूर विकसित हो जाता है, तो भरपूर ही फल देना प्रारम्भ कर देता है। उसकी छाया सभी को शांति, आराम प्रदान करती है। उसकी घनी पत्तियाँ, डालियां, अनेकों पक्षियों को आश्रय देती हैं, जानवरों को चारा देती है। डालियाँ, तना सूखकर इमारती लकड़ी देती हैं। वातावरण में भरपूर आक्सीजन प्रदान करती है।

कैसा हो यदि पेड़ बड़ा होकर फल ही नहीं दे, तो उसका क्या उपयोग? कौन उसे पसन्द करेगा? कोई नहीं, उसे काट कर जलाने की सलाह दी जायेगी।

इसलिये मनुष्य को शरीर के रखरखाव में पूर्ण स्वार्थी होना चाहिये, अच्छा पौष्टिक भोजन का सेवन करें, मस्तिष्क को खुला रखे एव दूसरों के लिये उपयोगी बनने का हर सम्भव प्रयास करें। आम के पेड़ से और भी शिक्षा प्राप्त की जा सकती है यदि किसी से पूछा जाये कि सर्वाधिक पत्थर किस पेड़ पर पड़ते हैं तो सभी का एक ही ज़वाब होगा ''आम का पेड़।''

इसी प्रकार आपने जीवन में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर कोई मुक़ाम हासिल कर लिया तो ईर्ष्यालु, असफल व्यक्ति आपका अनुसरण करन के स्थान पर आपकी आलोचना करेंगे, आपका बुरा करने का, आपको हानी पहुँचाने का प्रयास करेंगे। परन्तु आपको आम के पेड़ की भांति ही व्यवहार करना होगा। समस्त पत्थरों की बौछार आम का पेड़ सहन करता है, कुल्हाड़ी के वार झेलता है परन्तु फिर भी फल अवश्य देता है।

कुछ व्यक्ति जीवन में, सफलता की मदहोशी में अभिमानी हो जाते हैं, सभी को हेय दृष्टि से देखते हैं, उन्हें भी आम के पेड़ का अनुसरण करना चाहिये। जिस प्रकार आम की डाली, फल के भार से झुक जाती है, उसी प्रकार सफल व्यक्ति का व्यवहार भी नम्र और उदार होना चाहिये। ना कि खजूर के पेड़ की तरह व्यवहार करना चाहिये। जिनमें चन्द ख़जूर ही इतने ऊपर होते हैं कि किसी के हाथ आना भी दुश्कर होता है, और फिर भी उसका अभिमान, उसकी अकड़ आम के पेड़ की तुलना में अधिक होती है। आम का पेड़ अधिक उपयोगी व लोकप्रिय है अथवा खजूर का पेड़?

इसका उत्तर आप भी जानते हैं।

■ रिज़वान एजाज़ी

सभी सुधिजन पाठकों को महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई
-हिलव्यू समाचार परिवार

जय भोलेनाथ...

महेंद्र देवांगन 'माटी'
गरियाबंद, छत्तीसगढ

शिव शंकर को जो भी पूजे, मन वांछित फल पाते हैं।
औघड़ दानी शिव भोला है, जल्दी खुश हो जाते हैं।।
शिवरात्रि के महापर्व पर, दर्शन करने जाते हैं।
श्रद्धा पूर्वक फूल पान सब, अर्पित कर के आते हैं।।
बाघाम्बर को लपटे रहते, गले नाग की माला है।
अंग भभूत लगाये रहते, कानों बिच्छी बाला है।।
धुनी रमाते पर्वत ऊपर, बैठे वह कैलाशी है।
तीन लोक में विचरण करते, वह तो घट घट वासी है।।
बड़े दयालु भोले बाबा, जो माँगो दे देते हैं।
खुश रहते हैं भक्तों से वह, कभी नहीं कुछ लेते हैं।।

काव्य कोना

बहुत ज़रूरी है...

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)

एक हरिश्चन्द्र को
डोम के घर बिकना
स्वयं में सत्यनिष्ठा को
सदैव क़ायम रखना
बहुत जरूरी है...।
शर-शय्या में पड़ा देखना
अपनी छाती में चुभे तीर को
राष्ट्र की सुरक्षा ख़ातिर
भीष्म जैसे शूरवीर को
बहुत ज़रूरी है...।
वृद्ध-दुखी पिता को देख
असहाय असमर्थ उदास
राज्याभिषेक के मौके पर
एक राम का वनवास
बहुत ज़रूरी है...।

मेरे आँगन अमरूद

बात लगभग 10-12 वर्ष पुरानी है। मेरे आंगन में एक अमरूद का पेड़ था। इस पेड़ में पूरे वर्ष अमरूद फलता रहता था। परंतु जाड़ा और वर्षा के मौसम में दो बार बहुतायत से उस पेड़ में फलते अमरूद। उस पेड़ के अमरूद इतने स्वादिष्ट होते थे, कि जो भी एक बार खा ले वह बार-बार खाना चाहता था।

हमने अपनी गृह-वाटिका के उपजे फल या सब्जियों को कभी बेचा नहीं। अधिकतर अपने आस-पड़ोस में और परिचितों के बीच बांट देती। अमरूद भी मेरे मोहल्ले के सभी लोग खाते -क्या बच्चे क्या बड़े।

हमारा परिवार नौकरी और पढ़ाई के सिलसिले में बड़े से लेकर बच्चे तक दिन भर घर से बाहर रहते थे। इसलिए रविवार को अमरूद तोड़ने का कार्यक्रम होता,और उस क्रम में कुछ घर में रखकर बाकी आसपास के बच्चों और बड़ों के बीच बांट दिया जाता। अधिकतर बच्चों की लाइन मेरी चारदीवारी के बाहर लगी रहती थी अमरूद लेने के लिये। इसके बाद भी मोहल्ले के बच्चे क्या बड़े भी अमरूद चोरी कर तोड़ने से बाज नहीं आते थे। कई बार हमने कुछ लोगों को पेड़ पर चढ़ कर अमरूद तोड़ते भी देखा, और हमारी आवाज़ सुनकर वे ऊपर से छलांग लगा देते नीचे। कई बार मैंने इसके लिए मना भी किया,यह कहकर - आराम से उतरो छलांग मत लगाओ वरना चोट लगेगी। मैं तुम्हें मारने नहीं जा रही हूं। परंतु पके अमरूद तोड़ो,कच्चे मत तोड़ो।

एक बार तो ऐसे ही कूदने के क्रम में एक लड़के के पैर की हड्डी टूट गई और जब उसने चिल्लाना शुरू किया तो हमें ही दया वश उसे डॉक्टर के यहां भी भेजना पड़ा। फिर उसके घर वालों को मैंने कितनी फटकार भी लगाई,और अपने बच्चों को संभालने के लिए कहा। साथ ही यह भी कहा - जब हर रविवार को हम लोग तोड़ कर देते ही हैं अमरूद फिर ऐसे तोड़ने का मतलब क्या है। तुम्हारा बच्चा गिरा तो किस का नुकसान किया खुद बीमार हुआ और पैसा तो तुम्हारा ही जा रहा है।

परंतु वह घर वाले भी करते क्या बच्चों को कितनी देर संभाल के रखें।

एक बार की बात है मैं कार्यालय से बस से आने के बाद बाइक से अपने घर की ओर जा रही थी अपने बेटे के साथ। रास्ते में मुझे कुछ सामान लेना था। मैं कह कर बाइक के पास खड़ी हो गई, और बेटा दुकान में चला गया। मैंने देखा दो बच्चे थे जो एक छोटा सा झोला लिये पास ही सड़क के किनारे बैठे कुछ बेच रहे थे। मैंने उन पर ध्यान नहीं दिया, परन्तु वे बच्चे मुझे देखते ही घबरा गये। एक बच्चे ने मेरे विषय में सूचित करते हुए दूसरे बच्चे को कहा - भागो मलकिनी देख रही है, अभी अपना अमरूद पहचान कर हम लोग को बहुत मारेगी। तब मेरा ध्यान गया तो मैंने पहचाना वे दोनों बच्चे मेरे पड़ोस के ही थे। मेरे घर से थोड़ी ही दूर था उनका घर। मैं तो ऐसे जानती भी नहीं कि उन्होंने मेरे ही पेड़ का अमष्ठद तोड़कर व्यवसाय चला रखा है। मैंने झट आगे बढ़ उस बच्चे के हाथ से थैला पकड़ लिया और बच्चे का हाथ भी। फिर कहा - यह क्या हो रहा है क्या चोरी करके तुम अमरूद बेचते हो? एक तो चोरी से फल तोड़ा और उसको खाने के बदले तुम बेचने आ गये? तुम्हें पता है न,मैं अमरूद बेचती नहीं। अब तुम्हारी सजा यही है कि इस अमरूद को यहां से जाने वाले सभी लोगों के बीच बांटो,और तुमने इसे बेचकर जितना पैसा कमाया है, मंदिर की दान पेटी में डाल दो।

वह बच्चा रोने लगा आसपास कुछ लोग भी जमा हो गये। जब उन्हें पता चला तो वे लोग तो उसे सजा देने की मांग करने लगे,परंतु मुझे यह स्वीकार नहीं हुआ। मैंने कुछ अमरूद उन दोनों बच्चों के लिए छोड़कर शेष अमरूद वहां से आने-जाने वाले लोगों के बीच उन्हीं बच्चों के हाथ वितरित करवा दिया और उस पैसे को बगल के मंदिर की दान-पेटी में डलवा दिया। फिर उनसे कहा - अब आगे से तुम लोग कभी अगर मेरे अमरूद के पेड़ पर चढ़ोगे तो समझ लेना, तुम्हें मैं बड़ी सजा दूंगी। यदि अमरूद खाना है रविवार को आ जाओ, हम लोग तोड़ते हैं, जितना चाहोगे उतना मिल जाएगा, लेकिन सिर्फ खाने के लिये। बीच में भी अगर किसी दिन खाना चाहोगे तो आ जाना, और मेरे सामने ही पेड़ पर चढ़कर तोड़ लेना। लेकिन सिर्फ़ खाने के लिये, बेचने के लिए नहीं।

निर्मला कर्ण
रांची, झारखंड

मुझे अभी भी कभी-कभी याद आ जाती है यह घटना। मैं सोचती हूं,मैं तो अपने अमरूद को पहचानती नहीं; पर उन बच्चों ने ही अपनी पोल खोल दी। शायद वे बहुत सच्चे थे,क्योंकि बच्चे थे और उनकी यह चोरी पहली थी,इसलिए उन्हें लगा होगा कि मैं अपने अमरूद पहचान जाऊंगी।

आज वे दोनों बच्चे अपनी पढ़ाई पूरी कर नौकरी की तलाश में हैं। उन्हें कल को कोई अच्छी नौकरी भी मिल जाएगी। परंतु अभी भी मुझे देख कर वे झेंपी सी मुस्कुराहट बिखेर देते हैं,और मैं मुस्कुरा कर उनकी पीठ थपथपा देती हूं यह कहकर - तुम अच्छे बच्चे हो। जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया वैसे ही तुम किसी की चोरी पकड़ो, तो उसके साथ करना। जिससे वे कभी फिर चोरी ना कर सकें।

पता नहीं मैंने सही किया या गलत परंतु उन बच्चों को देखकर, और उनका व्यवहार मेरे साथ देख कर, साथ ही समाज में भी उनका व्यवहार देखकर मुझे लगता है कि मैंने उनके साथ सही किया। उनकी चोरी की आदत छूट गई, और वे एक अच्छे नागरिक बन गये।

लघुकथा

झुर्रियाँ

सुनते हैं! एक खुश ख़बरी है। अख़बार में मुँह डुबाये पति ने तिरछी नज़र से देखा। वर्षों बाद हमारा बेटा आ रहा है। साथ में बहू भी और छोटा-सा हमारा पोता भी। पति ने पुनः निगाह पत्नी पर डाली। खुशी उसके चेहरे पर उग आई झुर्रियों और खोतेनुमा दाढ़ी में उलझ कर रह गईं। जा रहीं हूँ तैयारी करने! मौनी बाबा, तुम तो न कुछ बोलोगे, न कुछ करोगे। पति की नज़र पेपर में मानो डूब-सी गई। बेटा- बहू आये। पोते की धमाचौकड़ी से घर भी नाच उठा।

एक दिन बाद। पापा, मैं जा रहा हूँ। छुट्टी नहीं मिली। आपकी बहू अभी यहीं रहेगी। बेटे का स्कूल भी बंद है।

उसने सोचा, महीना से पहले वह वापस आने से रहा तब तक के लिए बेटे के लिए दूध, चॉकलेट और रोजमर्रे के खर्चे लिए शोभा के हाथ में कुछ रुपये दे दूं।

उसने जेब से रुपये निकाले- लो रख लो, बाबू के दूध वगैरह के लिए। उसके आगे पत्नी और मां के हाथ एक साथ बढ़ गए। उसने रुपये पत्नी के हाथ में थमाते हुए उठकर बैग लिया और निकल गया। पति ने पेपर से आँखे उठाकर पत्नी पर डालीं। पत्नी भी उसी को देख रही थी। इस बार पति का दुख झुर्रियों में अटक कर नहीं रह गया । आँखों में पानी बनकर तैरने लगा था।

कृष्ण मनु

चुप रहना भी कभी-कभी पाप है

समय ने पूछा एक सवाल!
और पितामह बताओ कैसा है!
इस बाणों की शैया पर हाल?
क्या अब सुनाई देती है
द्रोपती के चीर के पीर
या इस बियाबान में गूंजती
दुर्योधन के अठाहास के तीर
या इन पीरों को बांध बैठे हो
अपनी ही किसी प्रतिज्ञा में
कि आत्मा ना हो अधीर!
और पितामह बताओ कैसा है
बाणों की शैया पर हाल!
कर्म का फल मिलता है
यह कैसे तुम भूले
इतने अत्याचारों पर
मुख तुम ना खोले
अत्याचारी तो अत्याचारी है
पर मौन होकर रहना
भूल शास्त्रों में भारी है
अगर समर्थ है तो आप
विरोध आपकी ज़िम्मेदारी है
और बताओ पितामह कैसा है!
बाणों की शैया पर हाल?

रेखा शाह आरबी
बलिया (यूपी)

मुक्तिधाम

गांव के पीछे, नदी किनारे,
देखा मैंने वह मुक्तिधाम।
आँसू की बरसात थी फिर भी,
जल रही थी, लकड़ियां तमाम।।
इक शरीर था, बिना जान के,
जो लेटा था, बीच चिता के।
किसी को ग़म, भाई था गुज़रा,
कोई व्याकुल था, बिना पिता के।
वहाँ खड़ा मैं,देख रहा था,
कुछ हंसते, मुस्काते चेहरे।
ये तो शायद, लोग वही थे,
जो बिल्कुल पत्थर दिल ठहरे।।
तरह तरह की, बात सुना मैं,
कुछ उसको कहते थे सज्जन।
कुछ कहते, बहुत बुरा था,
पाप कमाया सारा जीवन।।
काया उसकी, राख हो रही,
पर जीवित थे, उसके काम।
कौन से लोक में, वह जाएगा,
प्रश्न चल रहा, ये अविराम।।
चिता की लपटें, जला रही थी,
उस पड़ी हुई, निष्प्राण देह को।
पर क्या वो, जला सकती है,
लोगों के मन के, जलन-स्नेह को।।
वो तो अब, नादान हो चला,
जीवन के अंतिम, सत्य को पाकर।
मुक्तिधाम में, मिलेगी मुक्ति?
सोच रहा था, मैं घर आकर।।

तुषार शर्मा 'नादान' छत्तीसगढ़

ज़िंदगी का ज़िंदगी से वास्ता ज़िंदा रहे

हम रहें जब तक हमारा हौंसला ज़िंदा रहे
वक्त ने माना हमारे बीच रख दीं दूरियाँ
कोशिशें ये हों दिलों में रास्ता ज़िंदा रहे
ऐ मिरे दुश्मन तुझी ने दी मुझे ज़िंदादिली
मैं अगर ज़िंदा रहूं, तू भी सदा ज़िंदा रहे
प्यार से सुलझाइये, हल गुत्थियाँ हो जाएंगी
जब तलक संसार है ये फ़लसफ़ा जिंदा रहे
मेरी कविता, मेरे दोहे, गीत मेरे और गज़ल
मैं रहूँ या न रहूँ मेरा कहा ज़िदा रहे।

उमेश नाग,
कवयित्री

खून के रिश्ते खून के ही रहते हैं...

रवींद्र कुमार शर्मा
बिलासपुर (हि प्र)

भरी महफ़िल से चला गया वह उठकर
न जाने उसके मन में क्या था आया
हैरान था मैं उसे इस तरह जाता देखकर
न मैंने ही पूछा न उसने ही बताया
जाते जाते एक तिरछी नज़र डाली उसने
नज़रें वो हमसे मिला नहीं पाया
हर नज़र उठ रही थी उसी की तरफ़
कोई भी उसकी इस बात को समझ न पाया
रास्ते में मिल गया वह हमें एक दिन
नज़रें चुराई उसने हमने भी नहीं बुलाया
बेगानों की तरह पेश आ रहा था वो अब
उसकी इस हरक़त ने हमें बहुत रुलाया
पतझड़ सी हो गई है अब ज़िन्दगी उसके बग़ैर
न वो समझ सके न हमें समझ आया
वही आज हो गए हैं हमसे दूर
जिनको कभी हमने अपना था बनाया
रिश्ते नाते दुनियाँ में सब मतलब के होते हैं
बेगाने कभी अपने नहीं हो सकते यह अब समझ आया
खून के रिश्ते खून के ही रहते हैं ज़िंदगी में
अपनों की जगह कोई दूसरा नहीं ले पाया

हमारे प्यारे जीवः लॉयन

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार,

बच्चों, एक बार पता है क्या हुआ? एक दिन मिस्टर लायन जंगल में घूमने निकले। रास्ते में उन्हें एक पत्ते के नीचे छोटा सा चूहा छुपा हुआ दिख गया। फ़ौरन उसके पास जाकर पूछने लगे, बताओ जंगल का राजा कौन? चूहा थर-थर कॉपने लगा। बोला, हुजूर आप! गुड, कभी मत भूलना ये बात! कहते हुए ज़नाब आगे बढ़े। आगे उनको दिखा एक ज़ीब्रा। उन्होंने उस पर भी यही सवाल दागा। ज़ीब्रा जी ने भी घबरा कर उन्हीं को जंगल का राजा बताया। अब आगे उन्हें नज़र आया एक बूढ़ा सा ग्रे रंग का हाथी। हाथी जी गुनगुनी दोपहर में नींद का आनंद ले रहे थे। घमंड में चूर मिस्टर लायन जा पहुँचे उनके पास और दहाड़ने लगे, उठ जाओ। बताओ कौन है जंगल का राजा? बूढ़ा हाथी चौंक कर उठ गया। उसकी नींद में ख़लल पड़ चुका था । उसने आव देखा न ताव , अपनी सूँड़ को ऊपर करके मिस्टर लायन को पूँछ पकड़ कर उठाया, और ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे करते हुए चार पाँच बार घुमाया और तब तक झुलाता रहा जब तक उनकी आँखें रोल होकर बाहर नहीं आ गईं। हाथी जी ने उनको पेड़ों पर बाउंस किया और उन्हें झाड़ू बनाकर आस-पास के रास्ते को साफ़ करते चले। फिर उन्हें उसने ज़मीन पर गिरा दिया और उस पर जा बैठा। अंत में हाथी धीरे से उठा और खुश होकर अपने रास्ते चला गया। हे ! पीछे से मिस्टर लायन चिल्लाए। मैंने तो एक सिंपल सा सवाल पूछा था । अगर तुम्हें आंसर नहीं पता था तो इसमें इतना नाराज़ होने की क्या बात थी भई? है न मज़ेदार कहानी बच्चों? पर ये तो एक कहानी है। दरअसल लायन सचमुच इतना पावरफ़ुल होता है कि सिर्फ़ एक ब्लो में जंगली भैंसे को मार गिराता है। वो अपने एक पॉ के हल्के से वेव से अपनी शेरनी को धरती पर गिरा देता है , हालाँकि लायनैस का वजन शेर से कुछ कम ही होता है। बच्चों, शेरों को घने जंगलों की बनिस्बत खुले मैदानी इलाक़ों में रहना ज़्यादा पसंद होता है। हमारे देश में कभी जंगली शेर एक बड़ी तादाद में पाये जाते थे, ख़ासकर नॉर्थ और सेंट्रल इंडिया में। लेकिन ये कैटल का शिकार करना पसंद करते हैं क्योंकि वे इनका पसंदीदा आहार है, इसलिए इन्हें हम इंसानों ने शिकार कर कर के ख़त्म कर दिया , क्योंकि खुले में आसानी से मिल जाने के कारण शिकार था भी बहुत आसान न् ! और अब ये हमारे चिड़ियाघरों की शोभा बन कर रह गये हैं। मगर अफ़्रीका में ये आज भी राजा बने हुए हैं ।

क्रमशः

डॉ कविता माथुर, लेखिका, कवयित्री, टीवी आर्टिस्ट

परिणीति ने की सूरज की तारीफ

खुशियां फैलाने वाला परफेक्ट निर्देशक

अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा फिल्म 'ऊंचाई' को लेकर काफी उत्साहित हैं. परिणीति ने कहा, सूरज बड़जात्या सबसे सज्जन और सबसे अद्भुत इंसान हैं. वो एक क्रिएटिव व्यक्ति की रूप में काफी समझदार हैं, जो एक परफेक्ट निर्देशक और एक्टर हैं. ऊंचाई के सेट पर सूरज के साथ काम करना मेरे स्कूल वापस जाने जैसा है क्योंकि एक ही वक्त में इतना कुछ सीखना को मिला है.

वो कहती हैं, उन्होंने अपनी फिल्मों के जरिए लोगों तक प्यार और खुशियां फैलाई हैं. उन्होंने सभी को जीवन के कई महत्वपूर्ण सिखाए हैं तथा पीढ़ियों से हमारी भारतीय संस्कृति को दर्शाया है. हम खुशनसीब हैं कि सूरज जैसे कोई व्यक्ति हिंदी सिनेमा को आकार दे रहे हैं. इस फिल्म में अभिनेत्री परिणीति एक टूरिस्ट गाइड की भूमिका में नजर आने वाली हैं और उन्होंने फिल्म में अपने हिस्से की शूटिंग को पिछले साल से नेपाल में शुरू किया था. फिल्म में परिणीति के अलावा अमिताभ बच्चन, अनुपम खेर, बोमन ईरानी, नीना गुप्ता, सारिका और डैनी अहम किरदार में नजर आने वाले हैं. परिणीति के लिए ये फिल्म बेहद खास मानी जा रही है क्योंकि हाल में रिलीज हुई उनकी 3 फिल्में 'द गर्ल ऑन द ट्रेन', 'साइना' और 'संदीप पिंकी फरार' दर्शकों को कुछ खास पसंद नहीं आई.

बोलीं कंगना | बॉलीवुड में मूवी माफ़िया का राज

एक्ट्रेस कंगना रनौत ने आलिया भट्ट पर निशाना साधा है. उन्होंने लिखा, 'ये नहीं सुधरेंगे, इसलिए इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि स्क्रीन अब हॉलीवुड और साउथ की तरफ जा रहा है. बॉलीवुड की किस्मत तब तक खराब है जब तक मूवी माफिया पॉवर में हैं. बॉलीवुड माफिया डैडी पापा, जिन्होंने फिल्म इंडस्ट्री में वर्क कल्चर को अकेले ही बर्बाद कर दिया. उन्होंने कई बड़े डायरेक्टर्स के साथ इमोशनली जोड़-तोड़ किया है और उनके सिनेमा टैलेंट पर अपने प्रोडक्ट्स को थोपा है, इसकी रिलीज के बाद एक और उदाहरण सामने आएगा.' कंगना ने लिखा, लोगों को उनको एंटरटेन बंद करने की आवश्यकता है. कंगना ने भले ही अपने पोस्ट में आलिया और फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' का जिक्र नहीं किया है लेकिन उनका निशाना किस पर है, यह साफ है.

'लॉक अप' पहुंचा स्टैंड-अप कॉमेडियन

रियलिटी शो 'लॉकअप' में पहली प्रतियोगी निशा रावल के नाम की घोषणा करने के बाद, निर्माताओं ने अब कंगना रनौत द्वारा होस्ट किए गए शो के दूसरे प्रतियोगी की पहचान का खुलासा कर दिया है. स्टैंड-अप कॉमेडियन मुनव्वर फारूकी 'लॉक अप' के दूसरे प्रतियोगी होंगे.

पिछले साल इंदौर पुलिस ने धार्मिक भावनाओं को आहत करने के आरोप में उन्हें गिरफ्तार किया था और वे लगभग एक महीने तक जेल में रहे थे. साथ ही, वह एक लेखक और रैपर भी हैं. मुनव्वर कहते हैं, 'लॉक अप अपनी तरह का एक अनूठा शो है, यह मेरे लिए एक कठिन और चुनौतीपूर्ण सफर होगा. 'लॉक अप' अपने अनूठे और कभी न सुने गए फॉरमैट के कारण लांच होने के बाद से ही चर्चा का विषय बना हुआ है. इसमें 16 कॉन्ट्रोवर्शियल सेलेब्रिटीज उन सुविधाओं के बिना महीनों तक जेल में बंद रहेंगे जिन्हें हम आम तौर पर 'फ़ॉर ग्रांटेड' लेते हैं.

लंबे बाल, सफेद दाढ़ी में शाहरुख़

शाहरुख खान फिल्म 'पठान' की शूटिंग में बिजी हैं. इसी बीच शाहरुख की एक तस्वीर इंटरनेट पर वायरल हो गई है. इस तस्वीर में किंग खान का नया लुक देखने को मिल रहा है. तस्वीर में वह काले रंग का टक्सीडो पहने नजर आ रहे हैं. वह लंबे बाल और सॉल्ट एंड पेपर दाढ़ी में बेहद डेशिंग नजर आ रहे है.

इस तस्वीर के सामने आने के बाद से लोग कयास लगा रहे हैं कि यह अभिनेता की अगली फिल्म 'पठान' से उनका लुक हो सकता है. लेकिन यह एडिटेड तस्वीर है. उनकी यह तस्वीर सेलिब्रिटी फोटोग्राफर डब्बू रतनानी के साल 2017 में एक फोटोशूट की है. डब्बू ने शाहरुख की ओरिजिनल तस्वीर अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर की है. इसमें वह क्लीन सेव में नजर आ रहे हैं. इस तस्वीर को शेयर करते हुए उन्होंने लिखा- 'Be Yourself, Because An Original Is Worth More Than A Copy.' शाहरुख इस समय अपनी फिल्म 'पठान' की शूटिंग में बिजी हैं. इस फिल्म में वह दीपिका पादुकोन के साथ नजर आने वाले हैं.

क्लासिक वेस्टर्न शैली की 'थार'

अतीत का बदला लेने निकला हीरो

नेटफिलक्स की रिवेंज थ्रिलर फिल्म 'थार' में हर्षवर्धन अपने पिता अनिल कपूर के साथ नजर आएंगे. फिल्म से कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर की गई हैं. इसमें फातिमा सना शेख और सतीश कौशिक भी लीड रोल में नजर आएंगे. फिल्म 'थार' 80 के दशक की कहानी है. यह कहानी सिद्धार्थ यानी हर्षवर्धन की है. पुष्कर में नौकरी के लिए शिफ्ट होने के बाद सिद्धार्थ अपने अतीत का बदला लेने के लिए सफर पर निकल पड़ता है. राजसिंह चौधरी के निर्देशन में बनी यह पहली फिल्म है. फिल्म के निर्माता और अभिनेता अनिल कपूर ने कहा, हमने थार के साथ जो हासिल किया है, उस पर मुझे बहुत गर्व है और कई कारणों से फिल्म को लेकर बहुत उत्साहित हूं. यह राजस्थान में स्थापित एक नोयर थ्रिलर है जो क्लासिक वेस्टर्न शैली की है, जो भारतीय सिनेमा और दर्शकों के लिए पहली बार पेश की गई है. उन्होंने कहा, स्क्रीन पर हम हर्षवर्धन और फातिमा की ताजा जोड़ी देखते हैं और ऑफ-स्क्रीन हम निर्देशक राजसिंह चौधरी को महत्वाकांक्षी, जोखिम लेने वाले नवोदित कलाकारों की एक टीम के साथ जादू करते हुए देखते हैं. अभिनेता और निर्माता के रूप में, मैंने हमेशा नई सामग्री के साथ आगे बढ़ाने और यथास्थिति को तोड़ने की कोशिश की है.

पुलिस ऑफिसर अक्षय

एक्टर अजय देवगन ने इन दिनों अपनी अगली फिल्म 'दृश्यम 2' की शूटिंग शुरू कर दी है. फिल्म में अजय के साथ तब्बू और श्रिया सरन नजर आने वाली हैं. इस फिल्म में अक्षय खन्ना पुलिस ऑफिसर का किरदार निभाते नजर आएंगे. अक्षय का किरदार कोई साइड किरदार नहीं है. उनके लिए खासतौर से पूरा किरदार लिखा गया है जिसे वह फिल्म में परफार्म करते नजर आएंगे. अजय की दृश्यम इसी नाम की मलयालम भाषा में बनी सुपरस्टार मोहनलाल की फिल्म की हिंदी रीमेक थी, जिसे निशिकांत कामत ने निर्देशित किया था. 'दृश्यम 2' को अभिषेक पाठक निर्देशित कर रहे हैं.

TV मैजिक

खुद को चुनौती देनेवाली अभिनेत्री

शो 'बड़े अच्छे लगते हैं 2' में राम की मां नंदिनी का ग्रे किरदार निभाने वाली शुभावी चोकसी ने कहा कि मुझे खलनायिका के उलझे हुए किरदार की विविधता बहुत पसंद है. कहानी में नंदिनी, राम और प्रिया की जिंदगी में उथल-पुथल मचाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है और इन दोनों के बीच शक के बीज बो रही है. शुभावी ने बताया कि भारतीय अभिनेत्रियों के लिए ग्रे शेड नया नहीं है. जब रोल चुनने की बात आती है तो मैं उसमें हमेशा विविधता और परफॉर्म करने का स्कोप देखती हूं. नंदिनी की तरह ग्रे किरदार निभाना मेरे लिए लगातार आगे बढ़ते रहने और खुद को चुनौती देने का एक मौका है. यह शो सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन पर प्रसारित होता है.

शॉर्ट वीडियो के दीवाने हुए रितेश

एक्टर रितेश देशमुख शॉर्ट वीडियोज के दीवाने हो गए हैं. रितेश ने शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म एमएक्स टकाटक में अलग-अलग जॉनर्स में अपना अंदाज दिखाया है. इसमें कॉमेडी, मिमिक्री, सीन क्रिएशन आदि का समावेश है. इस शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म से जुड़ने के बाद एक्टर शहरी क्षेत्रों के अलावा ग्रामीण अंचलों के दर्शकों से जुड़ गए हैं. रितेश ने कहा कि एक्टिंग और लोगों का मनोरंजन करना हमेशा मुझे प्रेरित करता है और जब इसमें थोड़ी मस्ती और हंसी शामिल हो जाए, तो फिर बात ही कुछ अलग है. एमएक्स टकाटक शॉर्ट फॉर्म वीडियो इकोसिस्टम को नए सिरे से परिभाषित कर रहा है. इस प्लेटफॉर्म का उद्देश्य डायलॉग डबिंग, कॉमेडी, गेमिंग, डीआईवाई, फूड, स्पोर्ट्स, मीम्स और कई अन्य वीडियो का आनंद लेने और इसे बनाने के लिए डिजिटल उत्साही लोगों को बढ़ावा देना है.

शो 'वो तो है अलबेला' में लीड किरदार कृष्णा की भूमिका निभाने वाले शहीर शेख ने कहा कि छोटे पर्दे पर पहली बार बॉलीवुड और टॉलीवुड गाने के अंदाज में शो का एक सांग शूट किया गया है. इसमें शहीर ने एक एक्शन सांग परफॉर्म किया है. इस गाने में शहीर ने एक स्टिक के साथ परफॉर्म किया, जिसके लिए उन्होंने घंटों प्रैक्टिस की है. शहीर ने कहा कि कृष्णा बहुत कूल और मस्तमौला है.

स्टार LIFE

पहली फिल्म से छा गई थीं भाग्यश्री

भाग्यश्री बॉलीवुड की उन अभिनेत्रियों में से एक हैं जो अपनी पहली फिल्म से ही पर्दे पर छा गई थीं. उन्हें भी सलमान खान की अभिनेत्री के तौर पर जाना जाता है. भाग्यश्री का जन्म 23 फरवरी 1969 को महाराष्ट्र के सांगली राजघराने में हुआ था. उन्होंने अपनी पूरी पढ़ाई मुंबई से की थी. उन्होंने अपने अभिनय की शुरुआत साल 1987 में टीवी पर प्रसारित होने वाले अमोल पालेकर के शो 'कच्ची धूप' से की थी, लेकिन उनको असली पहचान सलमान की फिल्म 'मैंने प्यार किया' से मिली थी. यह भाग्यश्री की डेब्यू फिल्म भी थी. 'मैंने प्यार किया' में उन्होंने सुमन का किरदार निभाया था, जो एक ही रात में घर-घर में पॉपुलर हो गई थीं. उस समय भाग्यश्री महज 20 साल की थीं. सूरज बड़जात्या निर्देशित फिल्म 'मैंने प्यार किया' में सलमान और भाग्यश्री की जोड़ी को दर्शकों ने बेहद पसंद किया. टिकट खिड़की पर यह फिल्म सुपरहिट साबित हुई. एक तरह से इस जोड़ी का डंका बज गया था.

हिमालय संग शादी

'मैंने प्यार किया' के सफल होते ही भाग्यश्री ने शादी करने का फैसला कर लिया. फिल्म रिलीज होने के एक साल के भीतर ही भाग्यश्री ने हिमालय दासानी के साथ शादी कर ली. शादी के बाद भाग्यश्री ने 'कैद में है बुलबुल', 'त्यागी', 'पायल' और 'घर आया मेरा परदेसी' जैसी कुछ फिल्मों में काम तो किया लेकिन यह फिल्में बॉक्स ऑफिस पर दर्शकों के दिलों को जीतने में कामयाब न हो सकीं. फिर धीरे-धीरे सलमान की यह एक्ट्रेस पर्दे से गायब होती चली गई.

भोजपुरी, मराठी और तेलुगु में भी अभिनय

हालांकि, साल 2001 में प्रदर्शित फिल्म 'हेल्लो गर्ल्स' के जरिये भाग्यश्री ने एक बार फिर से बॉलीवुड में वापसी की लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली. इस बीच भाग्यश्री ने भोजपुरी, मराठी और तेलुगु फिल्मों में भी अभिनय किया. लेकिन, वह स्टारडम फिर उन्हें कभी न मिल सका जो उन्होंने 'मैंने प्यार किया' से हासिल किया था. 2014-2015 में भाग्यश्री छोटे पर्दे के सीरियल 'लौट आओ त्रिशा' में दिखीं. यह सीरियल काफी लोकप्रिय रहा. इसके अलावा वह 2009 में 'झलक दिखला जा' में बतौर प्रतियोगी नजर आ चुकी हैं.

2 बच्चों की मां

सौम्य नेचर वाली भाग्यश्री के 2 प्यारे बच्चे हैं. 23 साल का बेटा अभिमन्यु और 21 साल की बेटी अवन्तिका. लेकिन, भाग्यश्री को देख कर आप इस बात का अंदाजा भी नहीं लगा सकते कि वह 2 एडल्ट हो गए बच्चों की मां हैं. अभिमन्यु और अवन्तिका भी बॉलीवुड में अपना करिअर शुरू कर चुके हैं. भाग्यश्री को आखिरी बार फिर थलाइवी में देखा गया था. इस फिल्म में उनका किरदार काफी छोटा था, लेकिन दर्शकों ने काफी पसंद किया था. भाग्यश्री जल्द फिल्म 'राधे श्याम' में नजर आने वाली हैं.

स्टार STYLE

रेड कलर की ड्रेस में खुशी

खुशी कपूर ने इंस्टाग्राम पर अपनी तस्वीरें शेयर की हैं, जिसमें वो मस्ती करती दिख रही हैं. इन तस्वीरों में खुशी के साथ कजिन शनाया और उनकी दोस्त मुस्कान चनाना पोज देती दिख रही हैं. तस्वीर में खुशी रेड कलर की ड्रेस में, तो शनाया सिल्वर कलर की ड्रेस में बेहद खूबसूरत नजर आ रही हैं. खुशी और शनाया की इस तस्वीर को सोशल मीडिया पर फैंस खूब पसंद कर रहे हैं. फोटो को लाखों लोग लाइक कर चुके हैं और कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं.

किंग खान की बेटी और खुशी की दोस्त सुहाना ने तस्वीर में कमेंट कर लिखा- 'कैसे मैंने तस्वीर में अपना रास्ता बनाया है!' शनाया कपूर की मां महीप कपूर ने भी कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दी है. खुशी जल्द बॉलीवुड फिल्मों में डेब्यू करने वाली हैं. वो फिल्म निर्देशक जोया अख्तर के साथ काम कर रही हैं जो कि आर्चिज कॉमिक्स पर एक म्यूजिकल ड्रामा बना रही हैं. इस फिल्म में खुशी के अलावा सुहाना और अमिताभ बच्चन के नाती अगस्त्य नंदा भी अपना डेब्यू कर सकते हैं.

हॉलीवुड गॉसिप

गुस्सैल टॉम

टॉम क्रूज की पहली मैनेजर एलीन बर्लिन ने एक इंटरव्यू में कहा कि टॉम अपने करिअर की शुरुआत में बेहद गुस्सैल थे और उन्होंने एक अल्बम उन पर फेंका था. जब एलीन ने टॉम के साथ काम किया था तब उनकी उम्र महज 18 वर्ष थी.

मैनेजर ने कहा कि टॉम अपने लुक को लेकर भी बहुत असहज महसूस करते थे. एक बार पब्लिसिटी के लिए होने वाले फोटो शूट के लिए टॉम दिनभर अपने पोज के साथ प्रयोग करते रहे. एलीन के मुताबिक टॉम में गुस्सा था, कुंठा थी और अपने चार्म को लेकर असुरक्षा थी. ये सारे मूड उन्हें उस दौरान दिखाई दिए थे. उनमें टेम्पर इश्यू भी था. एलीन बताती हैं कि टॉम बेहद गुस्सैल थे. उन्हें अपने पिता से भी समस्या थी. वे जरा-जरा सी बात पर गुस्सा हो जाया करते थे.

Gadgets जोन

फोन में पंच-होल कटआउट वाला डिस्प्ले

मोटोरोला अपने नए स्मार्टफोन Motorola Edge 30 Pro को लांच करेगा. फोन में कंपनी 1080x2400 पिक्सल रेजॉलूशन के साथ 6.7 इंच ता OLED फुल एचडी+ डिस्प्ले देने वाली है. यह डिस्प्ले 144Hz के रिफ्रेश रेट और 576Hz के टच सैंप्लिंग रेट के साथ आता है. फोन में दिए गए डिस्प्ले का डिजाइन पंच-होल कटआउट वाला है. मोटो का यह स्मार्टफोन 12जीबी तक की LPDDR5 रैम और 256जीबी तक के UFS 3.1 स्टोरेज से लैस है. प्रोसेसर के तौर पर कंपनी इसमें अड्रीनो जीपीयू के साथ क्वालकॉम स्नैपड्रैगन 8 जेन 1 चिपसेट दे रही है. फोटोग्राफी के लिए फोन के बैक में एलईडी फ्लैश के साथ 3 कैमरे लगे हैं. इनमें 50 मेगापिक्सल के प्राइमरी कैमरा के साथ एक 5 मेगापिक्सल का अल्ट्रा-वाइड ऐंगल और एक 2 मेगापिक्सल सेंसर दिया गया है. सेल्फी के लिए फोन में 60 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा देने वाली है. इसमें 5000mAh की बैटरी दी गई है. यह बैटरी 68 वॉट की फास्ट चार्जिंग को सपोर्ट करती है. साइड-माउंटेड फिंगरप्रिंट सेंसर से लैस इस फोन में एंड्रॉयड-12 पर बेस्ड MyUI 3.0 दिया गया है. डॉल्बी ऐटमॉस साउंड से लैस इस फोन में कंपनी स्टायलस और फोलियो केस भी दे सकती है.

CAREER जोन

सफल होना है तो पॉजिटिव चीजों से जुड़ो

किसी भी एग्जाम की तैयारी के लिए हमें कुछ खास बातों को ध्यान में रखना पड़ता है. इसमें सबसे ज्यादा मदद हमारी इमेजिनेशन पावर करती है. वैज्ञानिक आइंस्टीन ने भी कहा था कि कल्पना ज्ञान से अधिक महत्व रखती है. इस महत्वपूर्ण बात को ध्यान में रखते हुए स्टूडेंट पॉजिटिव चीजों के बारे में सोचते हुए अपने आपको उनसे जोड़ेंगे तो एग्जाम में बेटर परफॉर्म करना आसान हो जाएगा.

टार्गेट की बनाएं तस्वीर

एग्जाम की तैयारी कर रहे स्टूडेंट सबसे पहले डिसाइड करें कि उन्हें कम से कम कितने परसेंट मार्क्स लाने हैं. अब मन ही मन एक तस्वीर बना लें कि आप अपने डिसाइड किए गए टार्गेट से ज्यादा परसेंट ले आए हैं. इस बात को दिन में कम से कम 5-6 बार जरूर दोहराएं, खासकर पढ़ने से पहले. इस तरह पढ़ाई के दौरान आपका ध्यान केवल आपके टार्गेट परसेंट पर बना रहेगा और आप पूरे मन से सब्जेक्ट की तैयारी कर पाएंगे.

एंज्वॉय योर ड्रीम

एग्जाम से पहले अच्छे रिजल्ट के बारे में इमेजिन करें और उसे एंज्वॉय करना भी सीखें. कल्पना करें कि आप अगली क्लॉस में हैं और इस क्लॉस में सबसे ज्यादा मार्क्स लाने के कारण आपको क्लॉस का मॉनीटर बना दिया गया है. घर, परिवार और दोस्त सभी आपको सफलता के लिए बधाई दे रहे हैं. जब मन में इस तरह की बातें आएंगी, तो आप खुद को प्रेरित महसूस करेंगे और अपनी कल्पना को साकार करने के प्रयास में जुट जाएंगे.

ऐसे करें फार्मूले याद

अपनी कल्पना में इमेज और रंगों का खूब प्रयोग करें. मैथ का कोई फार्मूला या कुछ और याद कर रहे हैं, तो इमेजिन करें कि इसके बारे में दोस्त आपसे डिस्कशन कर रहे हैं और आप इसके बारे में उन्हें विस्तार से जानकारी दे रहे हैं. लोग आपके जवाब से संतुष्ट होते हैं और आपकी तारीफ भी करते हैं. इस तरह की कल्पना से फार्मूले जल्दी याद होंगे और आप उन्हें कभी भूलेंगे भी नहीं.

फील फिट, रहें फिट

एग्जाम की अच्छी तैयारी के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से फिट होना भी जरूरी है. जब आप खुद को फिट समझेंगे, तभी फिट रह पाएंगे. इसके लिए इमेजिन करें कि किसी रेस के कॉम्पिटिशन में शामिल होने जा रहे हैं. इसके लिए आपने रेग्युलर प्रैक्टिस भी शुरू कर दी है. रोज किसी पार्क के दो-तीन चक्कर दौड़कर लगा रहे हैं. प्रैक्टिस से हर दिन आपकी स्पीड बढ़ रही है. खुद को हेल्दी रखने के लिए आपने ब्रेकफास्ट में ताजे फल और जूस लेना शुरू कर दिया है. इस तरह की कल्पना आपको अतिरिक्त एनर्जी लेने के लिए प्रेरित करेगी और आप बिना किसी के कहे फिट रहने के लिए जरूरी एक्सरसाइज करना भी शुरू कर देंगे. इस तरह की अप्रोच आपको फिट तो बनाएगी ही, साथ ही इससे आपका कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा.

एग्जाम हॉल

जब भी घर में स्टडी कर रहे हों तो यह सोचें कि आप एग्जाम हॉल में हैं और आपके सामने एग्जामिनर खड़ा है. आप उसके आदेशों का पालन कर रहे हैं और आपका ध्यान इधर-उधर न जाकर केवल अपने क्वेश्चन पेपर और आंसर शीट पर है. रोज घर पर इस तरह की कल्पना और प्रैक्टिस करेंगे तो एग्जाम को लेकर मन में जो डर है, वह दूर हो जाएगा.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

06

जयपुर >> सोमवार, 28 फरवरी, 2022

विधान सभा का आईओएस मोबाइल एप लांच

हिलव्यू समाचार

जयपुर। राजस्थान विधान सभा के सचिव महावीर प्रसाद शर्मा ने मंगलवार को यहां विधानसभा में बटन दबा कर विधान सभा का आईओएस (आईफोन ऑपरेटिंग सिस्टम) आधारित मोबाइल एप लॉच किया। उल्लेखनीय है कि विधानसभा का एन्ड्राइड आधारित मोबाइल एप पूर्व में संचालित है।

आईफोन ऑपरेटिंग सिस्टम उपकरण धारक उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिए यह एप जारी किया गया है। विधान सभा के इस एप में प्रश्न, प्रस्ताव, विधेयक, कार्यसूची, सत्र समीक्षा, बजट भाषण, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण, सदन की कार्यवाही के विवरण सहित विधानसभा के सदस्यों के उपयोग हेतु प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली व समाचार कतरनें भी उपलब्ध रहेंगी। इस एप में महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन परिचय भी उपलब्ध होंगे।

शर्मा ने बताया कि नवीनतम तकनीक में अग्रणी राजस्थान विधान सभा द्वारा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र के सहयोग से विकसित इस एप में विधान सभा के कार्य से सम्बन्धित नवीनतम जानकारी उपलब्ध रहेगी।

इस अवसर पर राज्य सूचना विज्ञान अधिकारी जितेन्द्र कुमार वर्मा, विधानसभा के वरिष्ठ उप सचिव महेश चन्द्र शर्मा, मुख्य अन्वेषण एवं संदर्भ संग्रहण अधिकारी व कम्प्यूटीकरण के नोडल अधिकारी विनोद मिश्रा सहित विधान सभा सचिवालय तथा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र के अधिकारी उपस्थित थे।

कोविड सुरक्षा के साथ नारायण सेवा संस्थान द्वारा 23 शहरों में दिव्यांग कैंप आयोजित

हिलव्यू समाचार

जयपुर। कोविड विषमताओं में भी दिव्यांग सेवा और कल्याण को निरंतर रखते हुए नारायण सेवा संस्थान द्वारा वर्ष 2021 के शुरुआती दो माह में ही 23 शहरों में निशुल्क चिकित्सा कैंप आयोजित किए गए हैं। इन कैंप के माध्यम से 6781 लोगों का पंजीयन किया गया, जिनमे कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण के लिए 2836 लोगों को चिन्हित किया गया है और 921 को कैलिपर्स प्रदान किए गए हैं। नारायण सेवा संस्थान गरीब और दिव्यांग वर्ग के उत्थान को समर्पित हैं और भारत के साथ साथ नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, यूक्रेन, यूके, यूएसए आदि देशों में कैंप के माध्यम से सहयोग प्रदान कर रही है। 'कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण और सर्जरी के माध्यम से हम दिव्यांग जनों को एक बेहतर भविष्य देने का प्रयास कर रहे हैं । इनमे बड़ी संख्या उन लोगों की है जो धन या जागरूकता के अभाव उपचार नही पा सके। नारायण सेवा संस्थान ऐसे आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से कमजोर वर्ग की सहायता में निरंतर कार्य कर रहा है। कोरोना काल में भी इन्हे आवश्यक समाधान मिल सके इसके लिए कोविड सुरक्षा नियमो का ध्यान रखते हुए विभिन्न शहरों में कैंप आयोजित किए जा रहे हैं,' श्री प्रशांत अग्रवाल, अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान। उन्होंने बताया के 2021 में अब तक 2836 लोगों को कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण के लिए और 749 को सर्जरी के लिए चिन्हित किया गया है। आगामी दिनों में इन कार्यों में और तेजी लाई जाएगी। वर्ष 1997 में स्थापना के बाद से नारायण सेवा संस्थान द्वारा अपने अब तक 427350 दिव्यांगोजनों को सशक्त किया गया है। वर्ष 2017 से संस्थान करेक्टिव सर्जरी के माध्यम से 61026 जन्मजात दिव्यांगो की सहायता कर चुका है।

आगामी दिनों में संस्थान इस सेवा प्रक्रिया में और वृद्धि के लिए प्रयासरत है । संस्थान द्वारा करेक्टिव सर्जरी की संख्या में 15 प्रतिशत, और कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण में 25 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि की जा रही है।

राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग का 13वां स्थापना दिवस मनाया

10 साल की नैना बनी एक दिन की बाल आयोग अध्यक्ष

हिलव्यू समाचार

जयपुर। राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग का 13वां स्थापना दिवस मनाया गया. इस मौके पर एक बालिका नैना खंडापा को एक दिन का आयोग अध्यक्ष तथा अन्य बच्चों को सदस्य बनाया गया. अध्यक्ष और सदस्य बने बच्चों ने आयोग की फुल कमीशन की बैठक का संचालन किया।

झालाना स्थित बाल आयोग कार्यालय में स्थाना दिवस पर समारोह आयोजित किया गया. कार्यक्रम में बच्चों की सहभागिता तय करने के उद्देश्य से बच्चों से ही आयोग का सम्पूर्ण कार्य करवाया गया. इसमें वॉरेन एकेडमी स्कूल कक्षा चार की छात्रा नैना खंडापा को बाल आयोग अध्यक्ष का कार्यभार सौंपा गया. वहीं, अलग-अलग छात्र-छात्राओं को आयोग सदस्य की जिम्मेदारी सौंपी गई. इसके बाद आयोग की फुल कमीशन की बैठक आयोजित की गई।

कार्यक्रम में बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया. अध्यक्ष बनी नैना ने फुल कमीशन की बैठक का संचालन किया. इस दौरान मौजूद आयोग अध्यक्ष संगीता बेनीवाल और अधिकारियों ने बच्चों को आयोग की कार्यप्रणाली से अवगत कराया. इसके अलावा बच्चों ने आयोग के कार्यों को लेकर सवाल किए, जिनका जवाब दिया गया।

कार्यक्रम में एक दिन की अध्यक्ष बनी नैना ने आयोग अध्यक्ष संगीता बेनीवाल के साथ स्थापना दिवस का केक भी काटा. इस मौके पर बच्चों को मिठाई भी वितरित की गई. वहीं, इस कार्यक्रम में आयोग के वार्षिक प्रतिवेदन का भी विमोचन किया गया. प्रतिवेदन में आयोग की ओर से किए गए कार्यों का उल्लेख किया गया है।

बाल अधिकारों को मिली मज़बूती

बाल आयोग अध्यक्ष संगीता बेनीवाल ने कहा कि आयोग की स्थापना से प्रदेश में बाल अधिकारों के संरक्षण को और मजबूती मिली है. मुझे भी इस आयोग से जुड़ने का गौरव मिला है और हम लगातार बच्चों को उनके अधिकार दिलाने के लिए जागरूकता कार्य कर रहें हैं. बेनीवाल ने कहा कि हमारी प्राथमिकता रहती है कि हर कार्यक्रम में बच्चों की सहभागिता हो जिससे आयोग द्वारा उनके लिए किए जा रहे कार्यों को के बारे में वे जान सकें. आयोग इस तरह की पहल करता रहा है और आगे भी बच्चों के लिए इस तरह के नवाचार जारी रहेंगे।

सीकर के ब्रेन डेड हुए युवक के हार्ट, लिवर और दोनों किडनी डोनेट की

मरने के बाद भी चार लोगों को नई ज़िंदगी दे गए सुनील

सड़क हादसे में गंभीर घायल सुनील हुए थे ब्रेन डेड, प्रदेश का 9वां हार्ट ट्रांसप्लांट

जयपुर। सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हुए सीकर के सुनील साई जाते-जाते चार लोगों को नई जिंदगी दे गए। उनके ब्रेन डेड होने पर डॉक्टर ने परिजनों को अनुदान के लिए समझाया जिसके बाद चार लोगों की जिंदगी को नई आशा मिली। सुनील का हृदय जयपुर के 44 वर्षीय जितेंद्र (परिवर्तित नाम) को लगाया गया। यह राजस्थान का 9वां हार्ट ट्रांसप्लांट था जोकि जयपुर के इटर्नल हॉस्पिटल में हुआ। सीनियर कार्डियक सर्जन डॉ. अजीत बाना के नेतृत्व में हॉस्पिटल का पांचवां हार्ट ट्रांसप्लांट किया गया। सुनील की किडनी एसएमएस हॉस्पिटल में ही ट्रांसप्लांट की गईं हैं जबकि लिवर अन्य अस्पताल में भेजा गया।

15 से 20 प्रतिशत रह गई थी हार्ट की कार्यक्षमता: डॉ अजीत ने बताया कि मरीज के हार्ट की कार्य क्षमता सिर्फ 15 से 20 प्रतिशत तक ही रह गई थी और बार-बार हार्ट फैलियर होने के कारण उन्हें अस्पताल भर्ती होना पड़ रहा था। डॉक्टर्स को उनके बचने की उम्मीद कम ही थी और उनके लिए ट्रांसप्लांट ही एकमात्र विकल्प रह गया था। हॉस्पिटल के हार्ट ट्रांसप्लांट प्रोग्राम के इंचार्ज डॉ विमलकांत यादव ने बताया कि मरीज का हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए रजिस्ट्रेशन कराया हुआ था और वेटिंग में उनका नंबर आने पर यह ट्रांसप्लांट किया गया। सुबह सात बजे एसएमएस हॉस्पिटल से ग्रीन कॉरिडोर बनाकर जेएलएन मार्ग होते हुए हार्ट इटर्नल हॉस्पिटल पहुंचा जहां कार्डियक सर्जरी टीम ने लंबी सर्जरी के बाद हृदय को मरीज में सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित किया। कार्डियक सर्जरी टीम में कार्डियक एनेस्थेटिक एक्सपर्ट डॉ. नवनीत मेहता, डॉ. चेतना, डॉ. रीना जैन, डॉ. अभिनव, डॉ. प्रेमलता थे वहीं कार्डियक सर्जन डॉ. शोभित, डॉ. अनुज, डॉ. नामदेव का इस ट्रांसप्लांट में विशेष सहयोग रहा।

जयपुर नगर निगम

एक जुलाई से नहीं दिखेंगे प्लास्टिक के पत्तल-दोने

हिलव्यू समाचार

जयपुर। 4 महीने बाद आपको शादी या अन्य समारोह में प्लास्टिक के बने दोने-पत्तल में भोजन करते हुए लोग नहीं दिखेंगे। पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले प्लास्टिक के आइटम को सरकार इस साल से पूरी तरह बैन करने जा रही है। केन्द्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु मंत्रालय 100 माइक्रोन से कम मोटाई की प्लास्टिक के बने तमाम उपयोगी सामान जैसे पॉलीथिन, गिलास, कांटे-चम्मच, कप, प्लेट समेत तमाम चीजों के उपयोग पर 1 जुलाई से बैन करने का निर्णय किया है। निगम ने इस संबंध में एक आज एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया है, जिसमें सभी व्यापारियों और संस्थाओं को इसका स्टॉक जल्द से जल्द खत्म करने के लिए कहा है। केन्द्र सरकार की ओर से जो रोक लगाई गई है उसमें मोबाइल फोन में लगाने वाली लीड, गुब्बारों के लिए प्लास्टिक की डंडिया, प्लास्टिक झंडों, कैंडी स्टीक, प्लास्टिक से बनी आइसक्रीम की डंडिया, 100 माइक्रोन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक के बैनर-पोस्टर है। इसके अलावा कटलरी, मिठाई के डिब्बे पैक करने वाली सजावटी पत्रियां, कप, प्लेट, गिलास, कांटे-चम्मच, चाकू, स्ट्रो, सिगरेट और निमंत्रण कार्ड के पैकेट इस कैटेगिरी में शामिल है। नगर निगम जयपुर की ओर से सभी व्यापारियों और स्टॉकिस्ट को उनके यहां जो सामान बचा है उसे इस साल 30 जून तक उपयोग करने या बेचने के निर्देश दिए है। साथ इन आइटम की नई खरीद पर रोक लगाने के लिए कहा है, ताकि 30 जून तक बचा स्टॉक खत्म किया जा सके। 1 जुलाई से सरकार ने इस पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाने का आदेश जारी किया है।

विप्र सेना और सोबर ने किया विप्र विभूतियों का सम्मान

गहलोत सरकार विप्र कल्याण के लिए प्रतिबद्धः डॉ. महेश जोशी

हिलव्यू समाचार

जयपुर। प्रदेश के जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी मंत्री डॉ महेश जोशी ने कहा है कि प्रदेश की गहलोत सरकार ब्राह्मण समाज के उत्थान और उन्हें उचित प्रतिनिधित्व देने के लिए संकल्पबद्ध है। यही कारण है कि प्रदेश में पहली बार विप्र कल्याण बोर्ड का गठन भी किया गया है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय को देखते हुए विप्र जन अपने युवाओं को रोजगारोन्मुखी शिक्षा के लिए प्रेरित करें और समाज उन्हें उचित प्रतिनिधित्व देकर अपना दायित्व निभाए। जोशी पारीक कॉलेज परिसर में विप्र सेना और ब्राह्मण एक्जीक्यूटिव्स राजस्थान, (सोबर) की और से मंगलवार को आयोजित आभार-अभिनंदन समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व मंत्री एवं गुजरात कांग्रेस प्रभारी डॉ रघु शर्मा ने की।

प्रदेश में पहली बार विप्र कल्याण बोर्ड का गठन किया गया है। इसके लिए विप्र सेना और सोबर ग्रुप ने राज्य सरकार और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का भी आभार व्यक्त किया। विप्र सेना प्रमुख सुनील तिवाड़ी तथा सोबर अध्यक्ष डॉ शिव गौतम ने बताया कि पारीक कॉलेज सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विप्र कल्याण बोर्ड के प्रथम नवनियुक्त अध्यक्ष पं. महेश शर्मा तथा उपाध्यक्ष श्रीमती मंजू शर्मा के अतिरिक्त खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष पं. बृजकिशोर शर्मा, राज. आर्थिक पिछड़ा वर्ग बोर्ड अध्यक्ष पं अनिल शर्मा, युवा बोर्ड के उपाध्यक्ष सुशील पारीक, श्रम सलाहकार समिति के उपाध्यक्ष पं. जगदीश श्रीमाली, राजस्थान विशेष योग्यजन आयोग के आयुक्त पं. उमाशंकर शर्मा, राज. गो सेवा आयोग के उपाध्क्ष सुमेर सिंह राजपुरोहित, राज. पशुधन विकास बोर्ड उपाध्यक्ष पं. चुन्नीलाल राजपुरोहित को सम्मानित किया गया। सोबर महासचिव आर सी शर्मा ने बताया कि इसी अवसर पर पिछले वर्ष राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयनित ब्राह्मण युवाओं को भी सम्मानित किया गया।

सीके बिरला हॉस्पिटल के सीनियर पेन मैनेजमेंट एक्सपर्ट डॉ. संजीव शर्मा ने बताया

खून का कम होता दौरा, बढ़ाता है पैरों में परेशानी

सरल उपचार से पा सकते हैं निजात

हिलव्यू समाचार

जयपुर। खून का दौरा शरीर में अपना अलग महत्व रखता है। इसके कम या 'यादा होने से कई तरह की परेशानियां पैदा हो जाती हैं। कुछ मरीज जो मधुमेह यानी डायबिटीज से ग्रसित होते हैं, जिन्हें बीपी की परेशानी होती है। जो धुम्रपान और अल्कोहल का सेवन करते हैं, उनमें खून का दौरा पैरों में कम होना चालू हो जाता है। इस कम होते खून के दौरे पर ध्यान न दिया जाए तो यह आगे चलकर बड़ी परेशानी बन सकता है।

घटता है खून का दौराः सीके बिरला हॉस्पिटल के सीनियर पेन मैनेजमेंट एक्सपर्ट डॉ. संजीव शर्मा ने बताया कि ऐसे मरीजों में खून का दौरा पैरों में कम होने लगता है। इस कारण से शुरुआती दौर में चलते समय पैरों में दर्द या पीड़ा महसूस होती है। इसका कारण यही है कि खून सही तरीके से पैरों में प्रवाहित नहीं हो पाता है, दौरा नहीं हो पाता है। इसकी वजह से पैरों में दर्द महसूस होता है। जब भी वो चलते है तो उनके पैरों मैं दर्द होता है क्योंकि खून का पूरा दौरा उनके पैरो मैं नही पहुचता जैसे ही वो बैठते हौ तो तुरंत उन्हें आराम मिल जाता हैं। इस स्थिति को इंटेमेटेंट क्लाउड़िकेशन की प्रॉब्लम कहते है।

धीरे-धीरे बीमारी बढ़ जाती हैः इस परेशानी को अनदेखा करते रहते हैं तो ये बीमारी आगे और बढ़ती है तो खून का दौरा और कम होता चला जाता है। ऐसी स्थिति में धीरे-धीरे करके पैरों के पंजों मे लगातार दर्द बना रहता हैं जिससे मरीज की परेशानी बढ़ जाती है। इसके बाद धीरे धीरे पैरो की उंगलियों में घाव होना या कालापन, गैंगरीन जैसी समस्या देखने को मिलने लगती है। ऐसे मरीजों मे अगर किसी एक जगह पर कोई ब्लॉक मिलता है तो उसे ऑपरेशन करके हटाया जा सकता है।

परक्यूटेनियस लम्बर सिंथेटेमी से कारगर इलाजः ऐसे मरीजो मे 90 प्रतिशत केसों मे एक जगह पर न मिलकर कई जगहों पर नस ब्लॉक हो जाती है और खून का दौरा कम हो जाता है। डॉ. संजीव ने बताया कि ऐसी स्थिति में सामान्य ऑपरेशन करना सही विकल्प नहीं होता है। ऐसे केसेज में खून का दौरा पंजे या अंगूठे तक सही तरीके से पहुंचाने के लिए एक खास तरह के ट्रीटमेंट को अपनाते हैं जिसे परक्यूटेनियस लंबस सिंथेटेमी प्रोसिजर कहा जाता है।

फ्लोरोस्कोपिक मशीन आती है कामः इसमें प्रोसीजर में हम फ्लोरोस्कोपिक मशीन से देखते हुए सिम्थेटिक सप्लाई पहुंचाने वाली नसों का ट्रीटमेंट करते हैं। इसमें हम मशीन से देखते हुए उसका ट्रीटमेंट करते है जिससे खून का दौरा नीचे पंजो की तरफ बढ़ जाता है। इसका सबसे बड़ा फायदा होता है कि खून का दौरा पूरे पंजे और उंगलियो में बढ़ जाता है और एक नीलापन या सफेदपन आने लग गया था वो ठीक होने लगता है। पैरों के हाथ लगाने में दर्द होता था, जो जलन सी महसूस होती थी, वह भी कम हो जाती है। झनझनाहट कम हो जाती है। कोई घाव होता है तो वो भी भरना चालू हो जाता है और थोड़ा बहुत गैंगरीन भी ठीक होने लग जाता है।

अजीत कुमार सक्सैना ने जयपुर डिस्कॉम के प्रबन्ध निदेशक का पदभार ग्रहण किया

हिलव्यू समाचार

जयपुर। राज्य सरकार द्वारा जारी आदेश की पालना में अजीत कुमार सक्सैना ने सोमवार 21 फरवरी, 2022 को जयपुर डिस्कॉम के प्रबन्ध निदेशक का पदभार ग्रहण कर लिया है। अजीत कुमार सक्सैना पूर्व में

जयपुर डिस्कॉम में निदेशक तकनीकी एवं मुख्य अभियन्ता जयपुर जोन सहित कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं। इसके साथ ही सक्सैना को ऊर्जा क्षेत्र में कार्य करने का 37 वर्ष का अनुभव है। पदभार ग्रहण करने के उपरान्त अजीत कुमार सक्सैना ने बताया कि उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ती, विद्युत दुर्घटनाओं को शुन्य करने के लिए विशेष प्रयास एवं सौ फीसदी राजस्व वसूली सहित उपभोक्ताओं को वर्तमान में मिल रही सेवाओं को ओर बेहतर करने तथा उनकी विद्युत समस्याओं के समाधान को प्राथमिकता दी जाएगी। उन्होंने बताया कि फील्ड में अधिकारी एवं कर्मचारी टीम भावना से कार्य करें एवं उपभोक्ताओं की समस्याओं को सुनकर उनका प्राथमिकता से निस्तारण करें। उपभोक्ताओं से सामंजस्य करके समन्वित प्रयास से लॉसेज को कम करते हुए शत-प्रतिशत राजस्व वसूली के लक्ष्य को पूरा करने के प्रयास करें। अजीत कुमार सक्सैना की जयपुर डिस्कॉम में प्रबन्ध निदेशक के पद पर हुई नियुक्ति का निगम के अभियन्ताओं, अधिकारियों और कर्मियों ने स्वागत किया।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**

हिलव्यू समाचार

hillviewsamachar@gmail.com

07

जयपुर >>सोमवार, 28 फरवरी, 2022

एंटरटेनमेंट टी 10 सुपर क्रिकेट लीग का पोस्टर विमोचन

हिलव्यू समाचार

जयपुर। जयपुर मे आयोजित होने वाली एंटरटेनमेंट टी 10 सुपर क्रिकेट लीग का पोस्टर विमोचन राजापार्क स्थित पिंक हैश टैग कैफ़े में साहित्यकार रिज़वान ऐजाज़ी, समाजसेवी राधे श्याम गुप्ता, पत्रकार और लेखिका शालिनी श्रीवास्तव, रीदम इंटरप्राइजेज की डॉ. भार्गवी जगधारी, सिंगर आँचल भट्ट , समाजसेवी नीरू शर्मा ने किया। क्रिकेट लीग के आयोजक अभिषेक सक्सेना ने बताया की यह लीग इस वर्ष महिलाओं के लिए आयोजित की जा रही है। जिसमें अभी तक लगभग 500 महिलायें लीग से जुड़ चुकी हैं . ये सभी महिलायें अलग-अलग क्षेत्रों से सम्बंधित हैं। राजनीति, शिक्षा, व्यवसाय, डॉक्टर ,इंजीनियर, वकील ,पत्रकार ,साहित्यकार नोकरी पेशा से लेकर घरेलू महिलाएं भी शामिल हैं ।

19 मार्च को आनन्द गंगवार स्मृति में होगी संगीतमय संध्या

हिलव्यू समाचार

जयपुर। जयपुर कल्चर सोसायटी के अध्यक्ष आनन्द गंगवार गत वर्ष 11 मार्च को दुनिया से विदा हो गए। प्रोड्यूसर, डायरेक्टर, आर्टिस्ट होने के साथ साथ वे एक अच्छे इंसान थे। जेसीएस ही नहीं सभी संस्थाएँ व मित्रगण उनके आकस्मिक निधन से बेहद अवसाद में रहे। आगामी 19 मार्च को जवाहर कला केन्द्र के रंगायन परिसर में शाम 6 बजे 'आनन्द एक अहसास' कार्यक्रम का आयोजन जेसीएस द्वारा किया जायेगा जिसमें संगीतमय श्रद्धांजलि के साथ आनन्द स्मृति ताजा होंगी। जयपुर कल्चर सोसायटी की अध्यक्ष कंचन आनन्द ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विजय अग्रवाल, समाजसेवी एवं व्यवसायी, इनके अतिरिक्त शहर की कई प्रतिष्ठित शख्सियत इसमें शिरकत करेंगी व कई प्रसिद्ध गायक संगीत प्रस्तुत करेंगे। आनन्द गंगवार के बाद जेसीएस का यह सबसे बड़ा भावपूर्ण व भव्य कार्यक्रम होगा।

श्रद्धांजलि

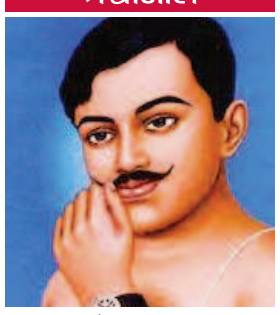

भारत के महान अमर सेनानी चन्द्रशेखर आज़ाद की पुण्यतिथि 27 फरवरी पर हिलव्यू समाचार परिवार उन्हें गौरवपूर्ण भावनात्मक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

केंद्रीय बजट : गज़ब का विश्लेषण

योजनाओं, परियोजनाओं बज़ट 2022 को रणनीतिक रोडमैप से धरातल पर पारदर्शिता से हितधारकों तक क्रियान्वयन करना चुनौतीपूर्ण कार्य

विश्व में किसी भी देश के सुव्यवस्थित विकास के लिए योजनाएं, परियोजनाएं, नीतियाँ और सबसे महत्वपूर्ण वार्षिक बजट बनाना होता है, परंतु उससे भी महत्वपूर्ण उन योजनाओं, परियोजनाओं, नीतियों को रणनीतिक रोडमैप बनाकर पारदर्शिता से क्रियान्वयन करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। जिससे निपटने के लिए कुशल नेतृत्व से लेकर कुशल विशेषज्ञों, हितधारकों, शासन प्रशासन सहित आम जनता का सहयोग, साथ, रुचि अति महत्वपूर्ण है जो उन देशों के लिए विकास के सफलता की कुंजी है।

साथियों बात अगर हम भारत की करें तो यही नीति भारत पर भी लागू होती है और रणनीतिक रोडमैप बनानें से लेकर योजनाओं, परियोजनाओं, सालाना बजट को धरातल पर पारदर्शिता से हितधारकों तक क्रियान्वयन करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। परंतु पिछले कुछ वर्षों से हम देख रहे हैं कि डिजिटल इंडिया, नए भारत के परिपेक्ष में कुछ बदलते अंदाज में रणनीतिक रोडमैप बनाकर क्रियान्वयन में सुचारूता से प्रोत्साहन देने के लिए उन लाभार्थी क्षेत्रों के जड़ में जाकर उनके लाभों को हितधारकों तक किस तरीके से पहुंचाएंगे इसका गज़ब का विश्लेषण कर वेबिनार के ज़रिए बताया जा रहा है।

साथियों बात अगर हम वर्तमान में 1 फरवरी 2022 को घोषित बजट 2022 के संपूर्ण क्षेत्रों जैसे, स्वास्थ्य, शिक्षा, रक्षा, परिवहन, दूरसंचार, प्रौद्योगिकी, कौशलता विकास, इंफ्रास्ट्रक्चर विकास, निजीकरण, रेल सहित हर क्षेत्र और विभाग को किस तरह आर्थिक लाभ, सुरक्षित आर्थिक अलोकेशन और योजनाओं का रोडमैप तैयार किया गया है इसकी करें तो मेरा मानना है कि इस साल

पहली बार ऐसा देखा जा रहा है कि उपरोक्त हर विभाग हर क्षेत्र के मंत्रालयों से लेकर प्रशासन स्तरपर रोज़ अलगअलग वेबिनार आयोजित किए जा रहे हैं और उसमें उस क्षेत्र के विशेषज्ञों हितधारकों, बुद्धिजीवियों सहित आम जनता को बज़ट 2022 में उस क्षेत्र के लिए किए गए प्रावधानों के हित को समझाया जा रहा है विशेष रूप से माननीय पीएम द्वारा जिस प्रकार से गज़ब का विश्लेषण कर प्रावधानों, एलोकेशंस के लाभों को समझाया जा रहा है काबिले-ए तारीफ़ है।

साथियों बात अगर हम पीएम द्वारा पिछले कुछ दिनों से बजट 2022 के विभिन्न क्षेत्रों में पढ़ने वाले सकारात्मक प्रभावों का उन क्षेत्रों द्वारा आयोजित वेबिनार में गज़ब के विश्लेषण की करें तो हाल ही में शिक्षा, कृषि, ग्रामीण और रक्षा क्षेत्र में वेबिनार में उनके संबोधन की करें तो शिक्षा क्षेत्र के वेबिनार में पीएम ने बज़ट 2022 में शामिल पाँच पहलुओं पर विस्तार से बताया। सबसे पहले, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को व्यापक बनाने के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं याने शिक्षा क्षेत्र की बढ़ी हुई क्षमताओं के साथ बेहतर गुणवत्ता के साथ शिक्षा का विस्तार करना। दूसरा, कौशल विकास पर जोर दिया गया है। एक डिजिटल कौशल इकोसिस्टम बनाने, उद्योग की मांग के अनुसार कौशल विकास और बेहतर उद्योग संपर्क बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। तीसरा, भारत के प्राचीन अनुभव तथा शहरी तथा योजना एवंडिजाइनिंग के ज्ञान को शिक्षा में शामिल करना महत्वपूर्ण है। चौथा, अंतर्राष्ट्रीयकरण पर बल दिया गया है। इसमें विश्व स्तर के विदेशी विश्वविद्यालयों का आगमन और गिफ्ट सिटी के संस्थानों को फिनटेक से संबंधित संस्थान सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है। पांचवां, एनिमेशन विजुअल इफेक्ट्स गेमिंग कॉमिक पर ध्यान केंद्रित करना, जहां रोजगार की अपार संभावनाएं हैं और जो एक बड़ा वैश्विक बाजार है। उन्होंने कहा, इस बजट से राष्ट्रीय शिक्षा नीति को साकार करने में काफ़ी मदद मिलेगी।

कृषि क्षेत्र पर पीएम ने कहा कि बजट में कृषि को आधुनिक और स्मार्ट बनाने के लिए मुख्य रूप से सात रास्ते सुझाए गए हैं। उन तरीकों पर चर्चा की जिनसे बजट कृषि क्षेत्र को मज़बूत करने में योगदान मिलेगा। वेबिनार 'स्मार्ट कृषि'- कार्यान्वयन के लिए रणनीतियों पर केंद्रित था।

ग्रामीण क्षेत्र पर उन्होंने कहा बजट में ग्रामीण क्षेत्र की करें तो इस बजट में सरकार द्वारा सैचुरेशन के इस बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए एक स्पष्ट रोडमैप दिया गया है। बजट में पीएम आवास योजना, ग्रामीण सड़क योजना, जल जीवन मिशन, नॉर्थ ईस्ट की कनेक्टिविटी, गाँवों की ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी, ऐसी हर योजना के लिए ज़रूरी प्रावधान किया गया है। बजट के बाद, बजट घोषणाओं को लागू करने के दिशा में आज आप सभी स्टेकहोल्डर्स से संवाद अपने आप में एक बहुत अहम है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास हमारी सरकारी की पोलिसी और एक्शन इसका मूलभूत परिणाम सूत्र है।

बजट में रक्षा क्षेत्र के विश्लेषण की करें तो, इस साल के बजट में देश के भीतर ही रिसर्च, डिज़ाइन और डेवलपमेंट से लेकर मैन्युफेक्चरिंग तक का एक वाइब्रेंट इकोसिस्टम विकसित करने का ब्लूप्रिंट है। रक्षा बजट में लगभग 70 परसेंट सिर्फ घरेलू उद्योगों के लिए रखा गया है। डिफेंस मिनिस्ट्री, अब तक 200 से भी ज्यादा रक्षा प्लेटफार्म और इक्विपमेंट्स की पॉजिटिव इंडिजेनीस्शन सूचि जारी कर चुकी है।

साथियों बात अगर हम बजट 2022 में स्वाभाविक रूप से कुछ चुनौतियों की करें तो जिस तरह से एलोकेशन किए गए हैं उसके लिए संसाधन जुटाना, पूंजीगत व्यय में वृद्धि की चुनौती, स्वास्थ्य और रोज़गार के वैकल्पिक तरीकों कौशलता विकास इत्यादि चुनौतियां है फिर भी दो समस्याएं महत्वपूर्ण हैं पहली हमें शीघ्रता से रोज़गार सृजित करने की ज़रूरत है क्योंकि सार्वजनिक रूप से विनियमित संस्थानों के माध्यम से कौशल प्रदान करने के कार्य को अच्छी तरह से किये जाने की उम्मीद पर बल देना होगा। हम सभी इस बात से अवगत हैं कि राज्य द्वारा संचालित स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा प्रणाली कैसे काम करती है, और यह इस प्रणाली को अपडेट करना है। इसलिए, यह आशा कि हम युवा महिलाओं और पुरुषों को बाजार की गतिशील और हमेशा बदलती जरूरतों से मेल खाने के लिए कौशल प्रदान कर सकते हैं, केवल एक सोचनीय हो सकता है। दूसरी बड़ी समस्या, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस)-5 (2019-21) के निष्कर्षों में हैएनएफएचएस-5 कई महत्वपूर्ण स्वास्थ्य आदानों के वितरण में महत्वपूर्ण सुधार दिखाता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि हर विभाग का केंद्रीय बजट 2022 उपरांत सकारात्मक विश्लेषण,वेबीनार से उत्सव का माहौल बन रहा है क्योंकि पीएम द्वारा खुद बजट से हर क्षेत्र की प्रभावोत्पादकता का गजब का विश्लेषण किया जा रहा है जो सराहनीय है वैसे भी रणनीतिक रोडमैप से योजना, बजट 2022 का धरातल पर पारदर्शिता से हितधारकों तक क्रियान्वयन कराना चुनौतीपूर्ण कार्य है जिसमें हम ज़रूर सफल होंगे।

संकलनकर्ता लेखक- कर विशेषज्ञ एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

कहानी

अनुपम वर्मा मासूम
युवा साहित्यकार

मोहब्बत

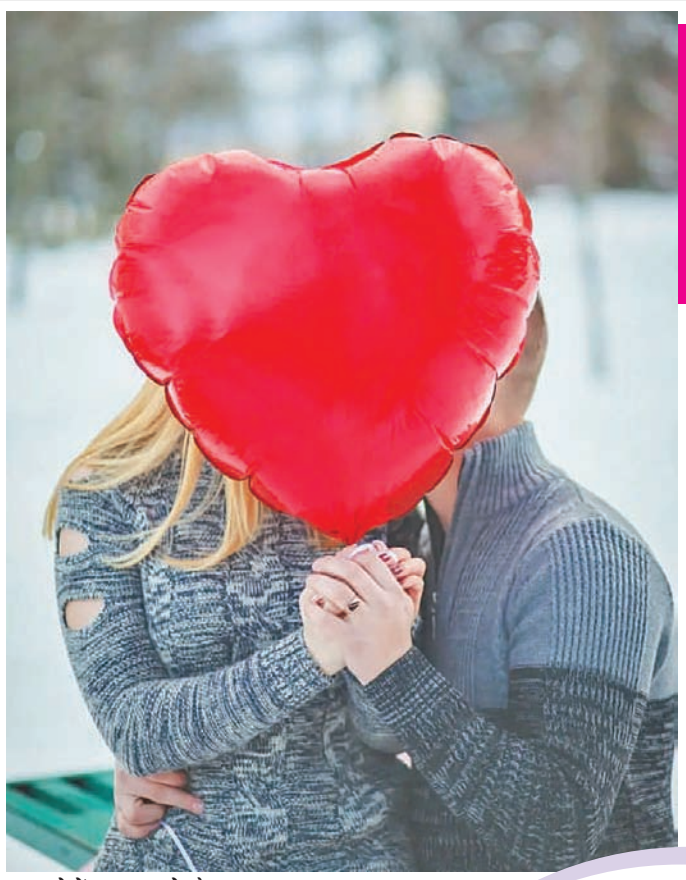

उसे देखकर बचपन की कौन सी याद आँखों से नहीं छलकी थी...? जवानी की कौन सी हूक आँखों से, नहीं बही थी..?

सामने सूरज ख़फ़ा था....वही सूरज जिसके साथ जामुन, इमली अमरूद चुराने पर न जाने कितनी दफ़ा पकड़ी और पीटी गयी थी अनुसुइया। गांव की हर पगडंडी उन दोनों के नन्हे पांवों के फेरों की गवाह थी। पांच गाँवों के बीच बना एक मात्र प्राइमरी विद्यालय बन्द होने के बाद वो दोनों इन्ही पगडंडियों पर पीली चटख धूप के नारंगी होने तक पाए जाते थे। उनके लिए तालाब, झुरमुट, मैदान पशु सब सगे संबंधी थे।

एक दिन असमय जलती हुई चिता को देखकर अनुसुइया सूरज की मैली कमीज मुट्ठी में भींच कर पूछ बैठी थी, सूरज मुझे भी जला देगा तू? मुझे मत जलाना, मैं जल जाऊँगी। और सूरज को ये सुनते ही मानो उस अनजान चिता में अनुसुइया की लाश कराहते हुए सुनाई दी। बिना कुछ कहे सूरज ने अनुसुइया को बाहों में भींच लिया। इस अचानक घटित हुई, घटना को जिक्र में बांध पाने की क्षमता न उन दोनों के मस्तिष्क में थी और न ही उनका शब्द ज्ञान इतना विस्तृत था, पर यह निश्चित था कि ये घटना बड़ी थी। दोनों के घरों की विचित्र सी मानचित्र लगभग एक ही थी , बस मोहल्ले अलग थे।

गरीबी का वक्त था पर कुदरत मेहरबान थी। एक तरफ़ जहाँ कुदरत मेहरबान होती है वहीं बड़ी ठिठोली भी करती है, उसे खेलना पसंद है ये भी कुदरत का ही अजब खेल था कि उसने वक्त बनाया था, वक्त न होता तो कभी अस्थिरता जैसी रोचक चीख़ इंसान नहीं भोग पाता।

वही वक्त बदला। मकानों की छतें पक्की हो गयीं, दीवारें मज़बूत हो गईं, पेड़ों के साये बूढ़े हो गए और गांव के लोग बुजुर्ग हो गए। एक चीज़ थी जिसे वक्त ने बदलना नहीं चाहा, वो थी सूरज के भीतर अनुसुइया को चिता की आंच से बचा लेने की चाह।

दोनों अब कस्बे के अलग अलग कॉलेजों में पढ़ते थे। गौव से कस्बे तक की पक्की सड़क पर, हर सुबह अनुसुइया की साइकल के कुछ पीछे सूरज की साइकल होती थी। उसे लगता हर तरफ़ उसकी अनुसुइया को जलाने के लिए चिताएं जल रही हैं।

अनुसुइया की यूनिफॉर्म की ग्रे कुर्ती पर सूती सफेद दुपट्टा ऐसे लगता मानों धुंधले आसमान से कोई मनचला सफेद बादल लिपट गया हो। जाते बचपन और आती जवानी के मोड़ पर उन दोनों के बीच जो पिघल पिघल कर उनका दिल धड़काने लगता था, वो भले ही चिता से न उठा हो, पर था धुआं ही। और धुआँ हवन कुंड से उठे या कोई घरौंदा जलने से, ख़बर हो ही जाती है। और एक रात, सर से पांव तक धड़कते हुए सूरज और अनुसुइया पहली दफ़ा, जान सके कि जब कोई नहीं देखता, तब मोहब्बत देखती है । उन लोगों को जिन पर वो मेहरबान होती है, जिन्हें वो इस लायक समझती है कि उनकी हथेलियों की लकीर सजा दे। पहली दफ़ा वो दोनों जान सके, कि मोहब्बत एक लंबा वक्त चाहती है जवान होने में, सजने में। घन्टों वो दोनों मोहब्बत ओढ़े, हाथ थामे, अपनी अपनी बेताबियों को महसूसते रहे। आशिकों के दिन जब रंगों से सजते हैं तो उनके आस पास बेख़बरी का रंग भी गहरा हो जाता है, उसी बेख़बरी में वो भूल जाते हैं कि उनके आस पास के लोग हर खबरदार होते हैं।

> सूरज के माँ बाप उसे हर आशिक के माँ बाप की तरह गांव से दूर शहर भेजना चाहते थे, ताकि लोग भूल भाल जाएं पर सूरज ने पलायन से इनक़ार कर दिया। उसकी शर्मिंदगी रहित आँखें, और आधे गंजे सर पर उगे सख्त कटीले से बालो के साथ वो अब बारूद का ढेर हो चुका था। ज़िधर आँख उठाता मूक चेतावनी होती कि वह सबके कुकर्मों का बख़ान गांव की हवा में बिखरा देगा। सूरज और अनुसूइया आधा पल को शर्मिंदा नहीं हुए थे। उनका बेख़ौफ़ होना ही गांव वालों के लिए दहशत बन गया।

एक दिन अनुसुइया, वक्त से पहले ही अपने बिस्तर से गायब थी। यूँ तो उसके भोले माँ बाप दीन दुनिया से डरने वाले लोग थे, पर फिर भी उन्हें बिना सुबूत के जवान होती, लोकाचार निपुण बेटी से सवाल करना ठीक नहीं लगा पर इतनी रात गए, सुविधासंपन्न घर की लड़की अकेले घर से बाहर चली जाए तो क़यास नहीं लगाए जाते, बल्कि सीधा कलंकिनी घोषित किया जाता है।

अनुसुइया और सूरज दोनों, अमरूद के बाग में पकड़े गए, देखने वालों ने खूब बातें बनाई। कोई कहता, अभी मेरी आँखों के आगे तो शलवार बांधी है कोई जुमला उछालता, अरे तभी कहूँ मेडिकल स्टोर पर क्यों खड़ी थी। चारों तरफ शोर ही शोर था।

सूरज को आधा गंजा करके उसका मुँह काला करने की तैयारी की गई। गांव भर की टूटी चप्पलों की माला तैयार करने में जिस भूरा ने फुर्ती दिखाई वो खुद जाने किसकी ब्याहता को ब्याह कर लाया था। अनुसुइया पर मार पीट का असर ही नहीं हो रहा था, ऐसे लग रहा था जैसे वो बेजान रुई हो, जिसके हाथ पांव हैं, जिसने कपड़े पहने हैं , उसे धुना जा रहा था। पंचायत के पेड़ से बंधा सूरज इतने अपमान के बाद भी निस्तेज नहीं हुआ था, उसकी उम्र की बगावत और अनुसुइया की उठती गिरती भीगी पलकें मिलकर उसका सर गर्व से ऊंचा किये हुए थीं।

सुबह हुई तो उसका मुंह काला करके, सर गंजा करके भरे गांव में चप्पलों की माला पहना कर घुमाया गया। अनुसुइया, को उसके माँ बाप ने उस रात तो मार पीट के छोड़ दिया, मगर थी तो उनकी पहली और आख़िरी औलाद भी, उपर से इतनी गुनी कि कभी माँ बाप को अहसास नहीं होने दिया कि वो दोनों पुत्र विहीन हैं। और तो और एक बार सिरफिरी लड़की की ऐसी मतिभृष्ट हुई कि बसन्त पंचमी के दिन देवी सरस्वती के सामने नत होने से पहले उसने अपनी माँ और बाप के सांवले बदसूरत पांव छू लिए थे। आज माँ बाप को भगवान से ऊपर समझने वाली वही अनुसुइया सूरज का नाम लेकर साँस ले रही थी, सूरज ....सूरज....सूरज

बिखरे बाल, फैला काजल, अधसूखे होंठ, अन्न विहीन पेट, पतले हाथ मांस पर झूलता कुर्ता.....ये वो सुंदरता है जो जवान प्रेमी को भी ममतामयी माँ में बदल सकता है, फिर अनुसुइया की माँ तो अनुसुइया के होते गर्वीली माँ थी। बेजान अनुसुइया माँ के सीने से ऐसे टिक गयी जैसे वो उस अधपके बालों वाली औरत की बाहों का मान रख रही हो। माएँ हर युग मे थोड़ी पागल होती हैं, समझती हैं कि औलाद अगर उनकी गोद मे है , तो मुट्ठी में भी है। उसके उलझे बालों में वक्त के साथ हटियल होती उंगलियों को फेरते हुए बोलीं, अनु, क्यों सोने सी देह में आग लगाई है, तुझे एक से बढ़कर एक न मिले तो कहना, सूरज तो भाई जैसा है , गांव गली में कोई शादी ब्याह होते हैं? भला भाई भतीजों से कब ब्याह होते, ऐसा होता तो मैं न कर लेती किसी दूर परे के भाई से ब्याह, यहाँ दूसरे गांव क्यों आती तेरे पिता जी से फेरे लेकर? माँ को भरोसा था कि ये दलील अनुसुइया को निरुत्तर कर देगी मगर अनुसूइया ने गालों पर आते हुए आंसुओं से भीगे बालों को समेट के सवाल सीने में दाग दिया, सूरज उस मोहल्ले का है जिधर आप अपने ब्याह के बाद से अब तक गिनती के चार बार भी नहीं गयीं, उसके पिता जी , और मेरे पापा दूर दूर तक किसी खूनी रिश्ते के सुबूत नहीं हैं, फिर वो कैसे मेरा भाई हो गया? जबरन क्यों मुझे उसकी बहन बनाना चाहते हो? बहती आँखों से मुस्कुराते हुए अनुसुइया बोलती गयी ,मैं नहीं मान सकूंगी ये अमानवीय रिश्ते, ये जबरन थोपे गए हैं, वो भाई होता तो क्या मुझे एक बार भी उसे देखकर राखी बाँधने की इच्छा नहीं होती? जितना हक़ मैं उस पर बचपन से जताती आयी हूँ क्या कुछ पल भी ऐसे नहीं आये होंगे जब मैं उसे अपना भाई संमझ पाती। माँ मेरे जीवन मे आधा पल नहीं आया जब मैंने सूरज को अपना भाई समझा हो। दीवानों की तरह उसने अपनी गूंगी खड़ी माँ को झिंझोड़ डाला न वो मेरे घर का है, न वो मेरे खानदान का न मोहल्ले का, वो मेरी रूह का है, मेरे जीवन का है, मेरे इस दुपट्टे का है, उसका दुपट्टा बेआबरू सा होकर जमीन पर पड़ा था। मोहब्बत के टोटके का शिकार हुई अनुसुइया को कमरे में बंद करके माँ बदहवास सी बाहर चली गयी।

बातों की एक बड़ी ख़ास बात है, जब ज़्यादा हो जाती हैं तो ख़तम हो जाती हैं। किस्सा अब पुराना पड़ने लगा।

सूरज के माँ बाप उसे हर आशिक के माँ बाप की तरह गांव से दूर शहर भेजना चाहते थे, ताकि लोग भूल भाल जाएं पर सूरज ने पलायन से इनक़ार कर दिया। उसकी शर्मिंदगी रहित आँखें, और आधे गंजे सर पर उगे सख्त कटीले से बालो के साथ वो अब बारूद का ढेर हो चुका था। ज़िधर आँख उठाता मूक चेतावनी होती कि वह सबके कुकर्मों का बख़ान गांव की हवा में बिखरा देगा। सूरज और अनुसूइया आधा पल को शर्मिंदा नहीं हुए थे। उनका बेख़ौफ़ होना ही गांव वालों के लिए दहशत बन गया।

वक्त अपनी गति से चलता रहा, लोगों ने उस मज़बूत प्रेमी जोड़े के रास्ते मे न आकर, किसी कमज़ोर प्रेमी जोड़े की तलाश करनी शुरू कर दी।

साल दर साल, गुज़रते रहे। दोनों एक दूसरे से नहीं मिले, मगर किसी और के भी नही हुए। दोनों ही अब क़ामयाब कहलाए जाते थे, सूरज ने नौकरी के बाद , शहर में घर ले लिया था, सुख सुविधा नौकर चाकर उसके माँ बाप के आगे जी हुजूरी करने लगे थे। स्मार्ट फोन के जमाने मे गांव शहर से कितना भी दूर हो, पर एक क्लिक के जरिये सब कुछ करीब लगने लगता है। अनु हमारी बहू होती तो इस घर मे रोशनी की ज़रूरत नहीं पड़ती, देखो, कैसी बड़ी बड़ी बातें लिखती है, सूरज के पिता सोशल मीडिया पर अनुसुइया के आर्टिकल्स पढ़ रहे थे। फोन सूरज की माँ के आगे करते हुए बोले। सुंदर कितनी हो गयी है, उसकी माँ अनुसुइया की तस्वीर पर ही टिक गई। फिर एक लंबी खामोशी कमरे में पसर गयी, एक ऐसी खामोशी जिसकी कोख में बदलाव कुनमुना रहा था।

इतवार का दिन था, आज अनुसुइया की छुट्टी थी, ग्राम पंचायत सचिव थी वो अब , साथ ही उसके लिखे आर्टिकल्स खूब मशहूर होते थे , सूरज का नाम कभी ज़ाहिर नहीं होने दिया था क्योंकि वो सूरज को उसके फैसले लेने के लिए आज़ाद रहने देना चाहती थी पर उसके सारे सोशल मीडिया फॉलोवर्स जानते थे कि अनुसुइया सिंह ने कभी प्यार किया था।

इतवार अब ढलान पर था, अनुसुइया, अब गांव की अनु बिटिया, अनु दीदी थी। अब पूरा गांव उसी का था, इतनी काबिल लड़की गांव में थी ही नहीं जिसने अपने माँ बाप का सर इस तरह ऊंचा किया हो। शाम ढले वक्त मिलने पर, अक्सर वो उसी झुरमुट की ओर चल पड़ती थी जहाँ वो और सूरज आखिरी दफ़ा मिले थे, बरसों का लंबा वक्त लगा था उसे, ये निर्बाध पथिक बनने में। अब कोई उसे उस झुरमुट के पास भीगी आँखों से खड़ा देखता तो पलट आता। उसके एकांत का सम्मान ही पूरे गांव का असल पश्चाताप था। उसके कदम आगे बढ़ते जा रहे थे, पर बीच में सूरज के माँ बाप और सूरज खड़े एकटक उसे देख रहे थे। वो अपने पुराने घर का ताला खोलने को व्यर्थता समझ रहे थे, उन्हें उनकी अनुसूइया चाहिए थी।

बरसों प्रेमी से बिछड़ कर जीती प्रेमिका, जब अचानक प्रेमी को सामने देखती है तो कांप ही उठती है, खुशी से।

बेधड़के दुनिया को दलील देने वाली, साड़ी में लिपटी अनुसुइया, सूरज को अचानक सामने पाकर, सर से पांव तक धड़कता हुआ दिल बन गई, और कब वो दिल बन्द होकर सूरज की बाहों में गिर गया होगा, ये उसे कभी खबर नहीं हो सकी।

गांव को जाते रास्ते पर, आज फिर मजमा था। कुछ लोग फुसफुसा रहे थे, कुछ जवान लड़के लड़कियों में जोश था, कुछ दौड़ दौड़ कर अनुसुइया के घर तक खबर ले जा रहे थे, अन्नू दीदी बेहोश हो गईं, सूरज भइया उन्हें गोदी में ला रहे हैं।

आज न अनुसुइया के माँ बाप को वो दोनों भाई बहन लगे, न गांव के बाकी लोगों में ये दोहराने की हिम्मत हुई। अनुसुइया पर जब पानी के छींटे पड़े तो होश में आने के बाद भी जब वो शर्म से आंखें नहीं खोल सकी तो सूरज उसकी सूती साड़ी का पल्लू उंगली में लपेट कर, पूरे हक से बोला, उठ जा अनु वरना अभी के अभी चिता तैयार करता हूँ, साथ साथ जलते हैं। उसके बाद, जो भी उस कमरे में हुआ, लोगों ने उन्हें एकांत देने में ही भलाई समझी क्योंकि उनके पास न मेल की तमीज थी न मिलाप का सलीका.....उन्हें सिर्फ़ मोहब्बत आती थी।

मोहब्बत से बड़ा मुहूर्त क्या होता, अगले दिन ही आग जली मगर चिता के बजाय विवाह की वेदी में, पूरे गांव के सामने अनुसुइया और सूरज एक दूसरे के हुए।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

08

जयपुर >>सोमवार, 28 फरवरी, 2022

बजट पर नज़र-समीक्षा

राजस्थान बजट पर समीक्षात्मक दृष्टिः प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिकों की टिप्पणियाँ

हिलव्यू समाचार

जयपुर। राजस्थान सरकार के तीन वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। आगामी दो वर्षों के लिए दिए गए बजट में जहाँ एक ओर तोहफ़ो की सौगात है वहीं कमियों की कसर भी अपना असर छोड़ती है। आम नागरिक बजट को किस दृष्टि से आंक रहा है यह अभियान चलाया हिलव्यू समाचार ने। जिसमें घरेलू महिला से लेकर कामकाजी महिला तक, साहित्यकारों से लेकर व्यावसायिक तक, शिक्षाविद से लेकर अनेक संस्थाओं से जुड़े प्रतिनिधियों के विचार जाने गए। किसी भी तरह से राजस्थान सरकार के बजट की एकतरफा रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं की गई है बल्कि प्रदेश के नागरिकों की मूल भावना गहलोत सरकार तक पहुँचाने का यह एक माध्यम है। जहाँ एक ओर प्रशंसा के पुलिन्दे हैं तो आलोचना की आग भी। महिला वर्ग की सुरक्षा को लेकर बजट में कोई टिप्पणी नहीं की गई है। जिसे लेकर महिला वर्ग ने अपना विरोध दर्ज किया है। रोजगार के नये आयाम, सड़कों की मरम्मत, शिक्षा और स्वास्थ्य की शक्ति से लेकर सरकारी कर्मचारियों की पेंशन बहाल करना बहुत बड़ा कदम है। इस संबंध में हिलव्यू समाचार प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिकों के विचार हूबहू सरकार के समक्ष रखने का एक माध्यम बना है।

शालिनी श्रीवास्तव
लेखिका एवं कवयित्री एवं संपादक हिलव्यू समाचार

राजस्थान का बजट महिलाओं के लिए छलावा

शशिकला दाधीच
व्याख्याता

राजस्थान के बजट में महिला सुरक्षा की कोई घोषणा नहीं है। हाल ही में राजस्थान में हुई उत्पीड़न की समस्याओं को देखते हुए किसी प्रकार के नए कदम नहीं उठाए गए। महिलाओं पर होने वाली सुरक्षा के नाम पर केवल दिखावा है। राजस्थान में हो रही हाल ही की घटनाओं को ध्यान में रखते हुए राजस्थान सरकार को महिला सुरक्षा हेतु विशेष कदम उठाने चाहिए थे जिससे महिलाएं पूरी तरह से सुरक्षित हो सके।

महिलाओं के लिए किसी प्रकार की नई व्यवस्था एवं योजनाएँ नहीं है जिससे कि रोजगार बढ़ सके। पिछले 2 वर्षों से कोरोना के कारण आर्थिक स्थिति कमज़ोर होने के कारण बालिका शिक्षा पर ही अधिक असर पड़ता जा रहा है।

महंगाई की मार को देखते हुए देखा गया है कि अधिकतर विद्यालयों में छात्र के स्थान पर छात्राओं की सख्या कम होती जा रही है, महिलाओं के ही काम में कमी आई है उनके पास रोजगार नहीं है। घर की व्यवस्थाएं बनाने हेतु महिलाओं की जिम्मेदारी बनती है और रसोई गैस से लेकर खाद्य सामग्री की मूल्य वृद्धि का परिणाम महिलाओं को ही भोगना पड़ता है, महिलाओं के लिए इस बजट में न सुरक्षा है ना ही राहत केवल छलावा है।

रोबोटिक बजट : सार्थक बजट

उमाकांत भारती,
साहित्यकार एवं संपादक पलाश

राजस्थान सरकार का बजट 2022-23 शिक्षा, स्वास्थ्य ,रोजगार और कृषि को बढ़ावा देने के लिए एक सार्थक बजट कहा जा सकता है। इसका सीधा सरोकार राज्य की जनता से जुड़ा हुआ है। इसलिए इसका स्वागत होना ही चाहिए। शहर से लेकर ग्राम पंचायत स्तर के लिए 1000-1000 महात्मा गांधी अंग्रेजी मीडियम स्कूल और 3820 विद्यालयों को सीनियर सेकेंडरी विद्यालय में प्रमोट करने की घोषणा के साथ- साथ 1 लाख बेरोजगारों को नौकरी और 10000 शिक्षकों की भर्ती की घोषणा बेरोजगारों के मन में गुदगुदी तो पैदा करेगी ही, कहीं यह चुनावी वादा की तरह ना हो जाए। सवाई मानसिंह अस्पताल में रोबोटिक सर्जरी की सुविधा एक क्रांतिकारी कदम है। सरकारी अस्पतालों में अब ओपीडी और आईपीडी में निशुल्क चिकित्सा सेवा प्रदान की जाएगी। इससे आम जनता को राहत मिलेगी। कृषि के क्षेत्र में एक सौ करोड़ और किसानों को 2700 करोड़ का अनुदान राज्य के अन्नदाताओं को कुछ राहत पहुंचाएगा। इसके अलावा मेट्रो का विस्तार, प्रत्येक जिलों में पुस्तकालयों के लिए 50 50 लाख, पैरा खेल एकेडमी के निर्माण की घोषणा और जोधपुर में 15 करोड़ से स्टेट स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी की स्थापना की भी घोषणा की गई है।लेकिन इस बजट में गरीब गुरुवा मजदूर और फुटपाथ पर जीवन बसर करने वाले निर्धन लोगों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए कुछ भी विशेष नहीं है जबकि इनके लिए रोजी -रोटी सुनिश्चित करना और एक छोटा सा आशियाना क्या ज़रूरी नहीं था?

केन्द्रिय व राज्य बजट दोनों ही आर्थिक विषमताओं को बढ़ाते हैं

सुमित्रा चौपडा
अखिल भारती जनवादी महिला समिति, राज्य संरक्षक, राज्य उपाध्यक्ष -सीटू

हाल ही में केंद्र सरकार (1 फरवरी 2022) व राज्य सरकार 23 फरवरी 2022 ने वर्ष 23 -23 का बजट पेश किया है। केंद्र सरकार का बजट न सिर्फ देश के मजदूर, किसान, खेतिहर मजदूरों और शहरी गरीब विरोधी होकर आम जनता के सभी हिस्सों की पूरी तरहा से अनदेखी करता है। बजट पूरी तरह से कॉर्पोरेट ,बड़े पूंजीपति घरानों के हित में तथा किसानों,मजदूरों और आम जनता की ज़रूरतो पर पूरी तरह से हमला करन `वाला है।

इतनी महंगाई के ज़माने में पेट्रोलियम सबसीडी में प्रति व्यक्ति भारी कटौती की गई है, जिसमे पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस के दाम और बढेंगे, जिसका सीधा असर महिलाओं पर पड़ता है।

राष्ट्रीय खाद्य-सुरक्षा अधिनियम के तहत खाद्य सबसीडी में 30 फीसद की कमी की गई है। यहाँ तक कि मिड-डे मील योजना (जिसे अब श्रद्ध पोषण नाम दिया गया है) के आवंटन में भी 1267 करोड़ की भारी कटौती की गयी है।

यह केंद्रीय बजट न केवल आर्थिक असमांनताओ को बढ़ाने वाला है, अपितु यह देश में पहले से ही बेहद गम्भीर हो चुके गरीबी, बेरोज़गारी और भुखमरी की चुनोती को भी और बढ़ाएगा।

इसी तरह राज्य सरकार द्वारा पेश किये गए बजट में सामाजिक सुरक्षा पेंशन जैसे विधवा, वृद्धा, दिव्यांग पेन्शन में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है। इन्हें नाम मात्र की पेंशन (500 से 1000 रुपया तक) दी जा रही है।

योजना कर्मी ,आंगन बाड़ी वर्कर्स, आशा सहयोगिनी,मिड डे मील वर्कर्स और संविदा कर्मियों के मानदेय में 20% की बढोतरी की है, जबकि इन्हें न्यूनतम मज़दूरी या राज्य कर्मचारी का दर्जा दिया जाना चाहिए था।

राजस्थान में महिला अपराधों पर नकेल नहीं

राजस्थान सरकार द्वारा पेश बजट में महिला सुरक्षा के मुद्दे पर कोई घोषणा और योजना सामने नही आई। यह चिंता का मुद्दा है किस तरह से सरकार ने होशियारी के साथ महिला सुरक्षा की नाकामी को छुपाने के लिए लोक लुभावन योजना के तहत एक करोड़ 33 लाख महिलाओं को स्मार्टफोन देने की घोषणा की है। जबकि पूरे देश में राजस्थान महिलाओं पर अपराध में अव्वल दर्जा हासिल कर रहा है। बजट में वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन के साथ-साथ खाद्य सुरक्षा प्रणाली को दुरुस्त करने पर कोई घोषणा नहीं की गई है और ना ही महंगाई को कम करने की कोई योजना इस बजट में दिखी। केवल विशेष वर्गों को राहत देने वाला बजट है। सभी महिला वर्ग मुख्यमंत्री जी से इस बजट में पुनः विचार करते हुए महिलाओं की सुरक्षा के लिए विशेष प्रावधान करे।

सीमा जैन
राज्य महासचिव, अ.भा. जनवादी महिला समिति

राशन कार्ड को खाद्य सुरक्षा से जोड़ना ज़रूरी

श्रद्धा पाण्डेय
डायरेक्टर इंटरनेशनल स्टूडेंसेंटर (विदेशी भाषा)

हर साल बजट में वादे बहुत होते हैं लेकिन ज़मीनी हालातों पर कोई फर्क नहीं पड़ता। जैसे पिछले करीब दो सालों से राशन कार्ड को खाद्य सुरक्षा से जोड़ने का पोर्टल राज्य में बंद है। इससे सबसे ज़्यादा नुकसान राज्य महिलाओं को झेलना पड़ा है। एक तो खाने का तेल लगातार महंगा हुआ है , ऊपर से सब्ज़ियों के दाम भी बढ़े हैं। ऐसे में प्रदेश की लाखों महिलाओं को सरकारी राशन के उनके अधिकार से वंचित रखना अमानवीय है। राज्य सरकार इसका दोष केंद्र पर डालती है और केंद्र भी यही करती है, लेकिन इस वज़ह से नुकसान आम महिलाओं का सबसे ज़्यादा हो रहा है। इसीलिए जनता को घोषणाओं पर अब भरोसा नहीं रहा है, सरकार ज़मीन पर काम करके दिखाए। वरना घोषणाएं तो हर साल होती रहती हैं।

दिशाहीन बजट में थोथी घोषणाओं का अंबारः सिंघवी

छबड़ा विधायक व पूर्व मंत्री प्रताप सिंह सिंघवी ने सरकार द्वारा बुधवार को विधानसभा में पेश किए गए बजट को निराशाजनक बताते हुए इसे पूरी तरह विफल बताया। उन्होंने कहा कि बजट नीति के लिए नहीं, बल्कि राजनीति के लिए है। पिछले तीन वर्षों के बजट में जो घोषणाएं की गई थीं, वे भी अभी तक पूरी नहीं हुई है। कांग्रेस जो वादे करके सत्ता में आई उनके बारे में बजट में कोई जिक्र नहीं है। कांग्रेस ने चुनाव के समय किसानों से कर्ज माफी की घोषणा की थी किन्तु जिन लोगों ने राष्ट्रीयकृत बैंकों से ऋण लिया हुआ है उसके बारे में बजट में कोई राहत प्रदान नहीं की गई है। एक ओर प्रदेश के किसान कोरोना से परेशान है वहीं दूसरी ओर बैंकों द्वारा किसानों की जमीन की कुर्की करने के नोटिस दिए जा रहे है। यह किसानों के साथ अन्याय है। सिंघवी ने कहा कि किसानों का कर्ज माफी और शिक्षित बेरोजगारों के बारे में चुनाव के समय कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी से जो घोषणाएं करवाई गई थीं, वे कागजों में ही सिमट कर रह गई हैं। बेरोजगारों द्वारा भत्ते के लिए किए आवेदन रोजगार कार्यालयों में लम्बित हैं। सरकार ने बेरोजगारों के साथ छल किया है और बेरोजगार भत्ता प्राप्त करने के लिए इंटरशिप का प्रावधान किया गया है। सिंघवी ने कहा कि बजट में लोक लुभावन घोषणाएं तो सरकार ने कर दी किंतु पैसे के अभाव में इनका धरातल पर क्रियान्वय संभव नहीं है। पहले से चल रही योजनाएं ही पैसे के अभाव में शिथिल पड़ी हैं। फिर कैसे संभव है कि इन घोषणाओं का क्रियान्वय हो सकेगा। सरकार ने आगामी चुनावों को ध्यान में रखकर बजट पेश किया गया है, जो राजनीति से प्रभावित है।

राजस्थान का बजट सराहनीय

निशा सिद्धू समर्थ
(NFIW)

राजस्थान में वर्ष 2022-23 का बजट काफी उत्साह बढ़ाने वाला रहा। यदि शिक्षा की बात की जाये तो 3820 स्कूलों को सीनियर सेकेंडरी में प्रमोट किया गया है। गरीब बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के महात्मा गाँधी विद्यालयों में पढ़ाने के साथ ही 2000 हजार नये विद्यालय खोलने का फैसला भी सराहनीय है। इसके साथ ही 19 जिलों में 36 कन्या महाविद्यालय खोलने का निर्णय भी लड़कियों के लिए सरकार की अच्छी पहल है।

17 हजार 500 सौ करोड़ रुपये का बिजली में अनुदान व आम जन को भी बिजली बिलों में राहत देने के लिए 4.50 करोड़ का अनुदान का भी बजट में प्रावधान किया गया है। प्रत्येक विधानसभा में सड़कों के लिए 10 करोड़ की घोषणा, जयपुर मेट्रो के विस्तार की घोषणा जुलाई 2022 में होगी रीट परीक्षा, पुराने अभ्यर्थियों से आवदेन शुल्क नहीं लिया जाएगा। SOG में एन्टी चीटिंग सेल बनेगी।

जयपुर जोधपुर व कोटा में राजीव गाँधी नॉलेज हब बनाया जायेगा महिलाओं के लिए CM वर्क फ्रॉम होम योजना की घोषणा भी सराहनीय है। सावित्रीबाई फुले वाचनालय खुलेंगे, 15,000 छात्रों को कोचिंग सुविधा होगी।

जयपुर मेट्रो के विस्तार की घोषणा भी एक बड़ा फैसला है। बड़ी चौपड़ से दिल्ली और आगरा हाईवे तक विस्तार होगा, इस पर 1185 करोड़ खर्च होंगे।

आमजन सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस को लेकर बड़े ऐलान हुए हैं। जो कि एक नया आयाम स्थापित करेंगे। यदि महिलाओं की दृष्टि से बजट को देखा जाये तो 1.33 लाख महिलाओं को समार्ट फोन से जोड़ा जायेगा जिससे कि महिलाएं अपडेट होंगी और सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलेगा।

कृषि बजट भी किसानो के लिए सुखद संदेश लेकर आया है।

कर्मचारिओं के लिए पुरानी पेंशन योजना बहाल कर राजस्थान देश का पहला राज्य बन मिसाल कायम की है।

बजट में महिलाएं हाशिए पर

दुर्गा स्वामी
रिटायर्ड प्राचार्या, खेत मजदूर यूनियन CEC मेंबर, जनवादी महिला समिति उपाध्यक्ष, गंगानगर

बजट, एक ऐसा शब्द जिससे हर तबके की महिलाएं प्रभावित होती है। अभी हाल ही में केंद्र और राज्य की सरकारों ने बजट पेश किया है। इस बजट में महिलाये हाशिये पर है,केवल मात्र योजना कर्मियों को 20% बढ़ाकर सरकार वाहीवाही लूटना चाहती है, महिला स्वास्थ्य, महिलाओं के रोजगार, पर सरकार ने चुप्पी साध रखी है। 90% महिलाये नरेगा में काम करती है उनकी मज़दूरी और काम के दिनों में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है, उल्टा प्रदेश में मनरेगा में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण महिलाओं के हाथ से रोज़गार छीनने की तैयारी है। नरेगा कानून पूरे प्रदेश में कहीं भी लागू नहीं है। महंगाई को रोकने के कोई क़दम नहीं उठाए गए है, पेट्रोल डीज़ल के दाम जस के तस है जो पूरे देश के पैमाने पर ज़्यादा है। गैस के दाम गृहणियों पर भारी है। नौकरियों की घोषणाएं खोखली है क्योंकि प्रदेश में बेरोजगारी का आंकड़ा 1,22 लाख क्ष, 7,21 लाख स्नातक, 2 लाख 12वीं से कम पढ़े लिखे बेरोज़गार है। किसानों का संपूर्ण कर्ज माफी का कहीं जिक्र नहीं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को दुरुस्त करने का कोई प्रावधान बजट में नहीं। महिला सुरक्षा, जबकि पिछले 2 महीनों में महिलाओं से सम्बंधित अनेकों, प्रदेश को शर्मसार करने वाली घटनाएं घटी हैं। पर सरकार चुप है। शिक्षा के बजट पर कोई चर्चा नहीं। मैं यहाँ सरकार के एक कदम की सराहना करना चाहूँगी वो है चिरंजीवी योजना, जिसका बजट दोगुना कर दिया गया।

थोथी घोषणाओं का लॉलीपॉप बजट लायी है गहलोत सरकारः डॉ अलका गुर्जर

भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय मंत्री डॉ अलका गुर्जर ने राजस्थान सरकार द्वारा पेश बजट 2022 पर तीव्र कटाक्ष करते हुए कहा कि थोथी घोषणाओं का लॉलीपॉप बजट लाई है गहलोत सरकार। डॉ अलका गुर्जर ने कहा कि मुख्यमंत्री गहलोत महिलाओं को स्मार्टफोन देने की बात कर रहे हैं लेकिन महिला अपराधों में राजस्थान देश में नंबर वन है महिलाएं त्राहिमाम कर रही हैं उनकी सुरक्षा के लिए कुछ नहीं सोच रहे मुख्यमंत्री अशोक गहलोत। डॉ गुर्जर ने कहा कि युवाओं के लिए नई भर्तियों की लॉलीपॉप फिर पेश की गई है लेकिन पहले की भर्तियां कोर्ट में लंबित है पेपर लीक होना आम बात हो गई है जिसके लिए कोई कदम नहीं उठाया गया है। डॉ अलका गुर्जर ने कहा कि इतना ही नहीं वास्तविकता यह है कि केंद्र सरकार से जिन योजनाओं का पैसा आवंटित हो रहा है उन्हीं को घुमा फिरा कर राज्य सरकार अपने नाम से वाहवाही लूटने का प्रयास करना चाहती है। डॉ अलका ने कहा की चुनावी बजट है जनता सब समझती है और 2023 में राजस्थान से कांग्रेस की संपूर्ण विदाई तय है।

गहलोत सरकार का बजट प्रदेश में फैलाएगा नई रोशनी

रितू अग्रवाल, एमडी शिवांक ग्रुप

गहलोत सरकार किसी भी आपदा व समस्या में समाधान बनकर खड़ी हुई है। व्यावसायिक वर्ग से लेकर महिला वर्ग हो या जरूरतमंद तबका सभी के लिए इसके पिटाने में कोई न कोई सौगात उभर कर सामने आई है। बेरोजगारों को मुख्यमंत्री ने एक लाख अतिरिक्त पदों की भर्ती का तोहफा दिया है। राज्य में नौकरी कर रहे पदक विजेता खिलाड़ी को राजस्थान में नियुक्ति देने का प्रावधान अपने आप में सराहनीय है। औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना रोजगार के नये अवसर प्रदान करेगी। वहीं एक ओर शिक्षा के क्षेत्र में भी 500 मदरसों में स्मार्ट क्लास बनाया जाना व डिजिटल शिक्षा के लिए नई तकनीक का स्थापित करना व विद्यालयों को क्रमोन्नत करना शिक्षा की ऊंचाईयों को दर्शाता है। दिव्यांगों के लिए जामडोली में बाबा आमटे विश्व विद्यालय बनेगा। इंद्रा गाँधी मातृत्व योजना पूरे प्रदेश में लागू करके संवेदनशीलता का परिचय दिया है।

एफएचटीआर प्रतिनिधिमंडल ने पर्यटन मंत्री से मुलाकात कर आभार जताया

यह एक क्रांतिकारी बजट है, अब घरेलू पर्यटन पर रहेगा फोकसः विश्वेंद्र सिंह

हिलव्यू समाचार

जयपुर। फेडरेशन ऑफ हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म ऑफ राजस्थान (एफएचटीआर) के सदस्यों ने आज सुबह राजस्थान सरकार के पर्यटन मंत्री श्री विश्वेंद्र सिंह से उनके आवास पर मुलाकात की। सरकार द्वारा शानदार और ऐतिहासिक बजट देने के लिए उन्होंने आभार जताया।

मंत्री विश्वेंद्र सिंह ने कहा कि यह एक बहुत ही क्रांतिकारी बजट है, जो कि सभी क्षेत्रों को लाभ प्रदान करेगा। इस बजट से पर्यटन क्षेत्र को विशेष रूप से फायदा हुआ है। 1989 से एक उद्योग के रूप में पहचाने जाने की इसकी लंबे समय से चली आ रही मांग आखिरकार पूरी हो गई है। पर्यटन अर्थव्यवस्था का आधार है। अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की कमी को देखते हुए अब घरेलू पर्यटन पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। आज के समय में पर्यटक सुरक्षा और आराम की तलाश में आते हैं। राज्य में घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए रिवर टूरिज्म, वॉटर स्पोर्ट्स के लिए सर्किट बनाने के साथ-साथ पर्यटन को सिविल एविएशन से जोड़ने जैसे पर्यटन के नए और अभिनव रूपों पर कार्य किया जा सकता है।

फेडरेशन ऑफ हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म ऑफ राजस्थान (एफएचटीआर) के अध्यक्ष, श्री अपूर्व कुमार ने कहा कि 75 वर्षों में, राजस्थान द्वारा यह एक मील का पत्थर बजट है, जिसने देश के लिए एक बेंचमार्क स्थापित किया है। यह बजट निवेश, रोजगार सृजन, समावेशी विकास और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को प्रोत्साहित करता है। उद्योग के रूप में पहचाने जाने की इसकी लंबे समय से चली आ रही मांग पूरी होना पर्यटन क्षेत्र के लिए एक बड़ा लाभ है। इससे राज्य में पर्यटन को काफी बढ़ावा मिलेगा। पर्यटन उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगा और राज्य के हर क्षेत्र में रोजगार सृजन, निवेश और इन्फ्रास्ट्रक्चर में सुधार करेगा। ग्रामीण पर्यटन, स्टाम्प शुल्क, हैरिटेज पर्यटन और भूमि परिवर्तन अधिनियम के लिए प्राप्त लाभ निजी सेक्टर्स को ग्रामीण क्षेत्रों में और अधिक निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

पूर्व अध्यक्ष, एफएचटीआर, रणधीर विक्रम सिंह ने कहा कि यह पहली बार है कि बजट में पर्यटन को मान्यता दी गई है। यह सभी व्यवसायों के लिए महत्वपूर्ण है और देश की जीडीपी में 10त्न का योगदान देता है। यदि पर्यटन फलता-फूलता है तो अन्य व्यवसायों को भी लाभ होगा। एफएचटीआर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री कुलदीप सिंह चंदेला ने कहा कि राजस्थान अपने आप में एक विशाल फिल्म सिटी है और सभी होटल इसके स्टूडियो बन सकते हैं। सरकार से अनुमति लेकर अपेक्षित शुल्क जमा करने के बाद इन होटलों में फिल्म की शूटिंग की अनुमति दी जानी चाहिए। इस अवसर पर एफएचटीआर के अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

शिक्षा व स्वास्थ्य की दृष्टि से बजट बेहद प्रशंसनीय

स्नेहलता भारद्वाज
शिक्षाविद एवं समाजसेविका

राजस्थान सरकार की बजट घोषणा ने किसी भी क्षेत्र किसी भी वर्ग को अछूता नहीं रखा। आम आदमी हो या मध्यम वर्ग, व्यावसायिक हो या महिला वर्ग, शिक्षा हो या स्वास्थ्य, शहरी विकास हो या ग्राम विकास, हर पहलू को छूते हुए राजस्थान सरकार ने अपनी कार्य क्षमता व योग्यता का परिचय दिया है। शिक्षा के क्षेत्र में 3800 स्कूलों को सेकेण्डरी से सीनियर सेकेण्डरी करना, 200 नये प्राईमरी स्कूल खोलना, 18 जिलों में नर्सिंग व मेडिकल खोलने का प्रावधान मदरसों के लिए भी विशेष नीति लाकर शैक्षणिक स्तर को सुदृढ़ बनाने का काम राजस्थान सरकार ने किया है। स्वास्थ्य की दृष्टि से आउट डोर-इनडोर सुविधा होना व सभी राजकीय अस्पताल में फ्री सेवा, चिरंजीवी योजना में 5 लाख की बजाय 10 लाख तक इलाज होना संभव किया जाना राजस्थान सरकार की ही क़ाबिलियत है। महिला सशक्तिकरण के साथ-साथ आधुनिक तकनीक से महिलाओं को जोड़ने के लिए जो मोबाइल देने का फ़ैसला हुआ है वह भी सराहनीय है।

राजस्थान बजट से महिलाओं के किचन का बजट बिगड़ा

सुनीता पारीक
गृहणी

गहलोत सरकार के बजट ने प्रदेश की आधी आबादी को निराश किया है। क़ाश घरेलू सिलेंडर के दाम कम किए जाते, रसोई सामग्री के दाम कम होते एवं महिलाओं पर रहम होता यदि दालें, खाने का तेल, रसोई सामग्री एवं अन्य चीजों के दामों में हो रही बेतहाशा वृद्धि रोकने के उपाय क़ाश बजट में किये जाते। गैस, पेट्रोल, डीजल के दाम कम नहीं किये। कुंभकरण की नींद में सो रही गहलोत सरकार ने मौजूदा बजट में महिलाओं को कोई राहत नहीं दी. इस बजट ने महिलाओं को पूरी तरह से निराश किया है। बजट में महिला... घर का काम करो क्योंकि बाहर काम नहीं है और सुरक्षा तो और भी नहीं। खाली समय में स्मार्ट फोन पे चैट करो। महिला सुरक्षा, बच्चियों की सुरक्षा और सबसे बड़ी जो प्रदेश की ज्वलंत समस्या है लॉ एंड ऑर्डर उसके लिए इस बजट में कोई प्रावधान नहीं किया है केवल कुछ झूठी व थोथी घोषणाएं की। प्रदेश में महिलाओं के साथ अपराध दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं।

महिला सुरक्षा के लिए कोई ठोस क़दम बजट में नहीं

रिमता शुक्ला
आर्टिस्ट,कवियत्री, एक्टिविस्ट

23 फरवरी 2022 को राजस्थान सरकार द्वारा बजट पारित किया, जिसमें महिलाओं की सुरक्षा और स्वाथ्य को लेकर कोई ठोस प्रावधान नहीं किया गया। विदित है कि राजस्थान में छोटी बच्चियों और महिलाओं के साथ यौन हिंसा में काफी बढोतरी हुई,जिसको सरकार नियंत्रित नहीं कर पा रही है, इस बजट में सरकार की तरफ से कोई पुख्ता योजना नहीं है, जिसकी हम महिला वर्ग उम्मीद लगाए हुए थे, यह महिलाओं के प्रति संवेदनहीनता को दर्शाता है, साथ ही महिलाओं के रोजगार के लिए बजट में कोई विशेष प्रावधान नही है। सरकार को चाहिए कि महिलाओं की सुरक्षा और स्वाथ्य, रोज़गार के लिए उचित नियम बनाए, जिससे वो इन नियमों का उपयोग अपनी बेहतरी के लिए कर सकें।